प्रकाशक
सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट
बीकानेर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण
सन् १९६ ई
मूल्य – २ रुपया

मुद्रक
अजन्ता प्रिंटर्स जयपुर

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वांगीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारम्भ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१ विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सम्बन्ध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है जिसकी सन्तोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर सम्पादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी।

३ आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अंतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१ कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता।
२. आमै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।
३ बरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन संभव नहीं हो सका है। इसका भाग ५ अंक ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अंक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और बृहत् विशेषांक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्त्व के संबंध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओं के लिये 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध पत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचंद नाहटा की बृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६ पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७ राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान-भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड़ क्षेत्र के ५ लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत घूमर के लोकगीत बाल लोकगीत लोरियां और लगभग ७ लोक कथाएं संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१ बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११ जसवंत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२ जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३ जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४ बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५ इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा. लुइजि पिओ टैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध लेख कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे हैं।

१६ बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा. वासुदेवशरण अग्रवाल, डा. कैलाशनाथ काटजू, राय श्रीकृष्णदास, डा. जी. रामचन्द्रन्, डा. सत्यप्रकाश, डा. डब्लू. एलेन, डा. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा. तिवेरिओ-तिवेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस आयोजन के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम ए विसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम ए, हूंडलोद थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवनकाल में संस्कृत हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सम्भव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा सदर्भ पुस्तकालय है और न कार्यक्रम को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चित ही बढ़ा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्त्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये १५   ) रु इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३ ०) तीस हजार की सहायता राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशना

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ११ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१	राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२	राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा. शिवस्वरूप शर्मा अचल
३	अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४	हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५	पद्मिनी चरित्र चौपई—	"
६	दलपत विलास—	श्री रावत सारस्वत
७	डिंगल गीत—	" "
८	पंवार वंश दर्पण—	डा. दशरथ शर्मा
९.	पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१	हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११	पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१२	महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३	सीताराम चौपई—	श्री अगरचंद नाहटा
१४	जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचंद नाहटा और डा. हरिवल्लभ भायाणी
१५	सदयवत्स वीर प्रबंध—	प्रो. मंजुलाल मजूमदार
१६	जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७	जिनहर्ष कृतिकुसुमांजलि—	"
१८	कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१९.	राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२	वीर रस रा दूहा—	"
२१	राजस्थान के नीति दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२	राजस्थानी व्रत कथाएं—	"
२३	राजस्थानी प्रेम कथाएं—	"
२४	चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ मुहुणी—	श्री अगरचंद नाहटा और म० विनय सागर
२६ जिनहर्ष ग्रंथावली	श्री अगरचंद नाहटा
२७ राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथों का विवरण	"
२८ दम्पति विनोद	"
२९ हीयाळी—राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	" "
३० समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१ दुरसा आढ़ा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा. डा. दशरथ शर्मा) ईशरदास ग्रंथावली (संपा. बदरीप्रसाद साकरिया) रामरासो (प्रो. गोवर्द्धन शर्मा) राजस्थानी जैन साहित्य (ले. श्री अगरचंद नाहटा) नागदमण (संपा. बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया, जो सौभाग्य से शिक्षा मंत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त करने में पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया जिससे हम इस बृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व. पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता जैन भवन संग्रह कलकत्ता महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान भण्डार बीकानेर एशियाटिक सोसाइटी बंबई आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा मुनि पुण्यविजयजी मुनि रमणिक विजयजी श्री सीताराम लालस श्री रविशंकर देराश्री पं. हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रंथों का संपादन सम्भव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वापि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाञ्जलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक

लालचन्द कोठारी

प्रधान-मन्त्री

सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

बीकानेर

मार्गशीर्ष शुक्ला १५

संवत् २ १७

दिसम्बर १ १९६१

अनुक्रमणिका

प्रथम पृष्ठ

अनूप संस्कृत लायब्रेरी
बीकानेर की
अचलदास खीचीरी
वचनिका की
संवत् १६३१ की प्रति

अन्तिम पृष्ठ

अचलदास खीची री वचनिका
[इतिहास की दृष्टि से परीक्षण]

लगभग पैंतालीस वर्ष पूर्व महामनीषी श्री टैस्सितोरी ने अचलदास खीची री वचनिका के विषय मे ये शब्द लिखे थे —

"गागरोण के खीची शासक अचलदास भोजावत की वचनिका शिवदास चारण द्वारा रचित गद्य मिश्रित तुकान्त पद्य की कृति है। माण्डव के पातिशाह ने गागरोण के दुर्ग पर घेरा डाला। अचलदास और उसके पुर्मस्व सैनिकों ने दुर्ग के टूटने पर अपनी ललनाओं की अग्नि मे आहुति दी और हाथो मे तलवारें लेकर लड़ते हुए वीर गति प्राप्त की। अचलदास के इसी हठीले युद्ध का वर्णन इस ग्रन्थ मे है। प्रतीत होता है कि घटनाओं का और ग्रन्थ की रचना का समय एक है। शिवदास ने अपने आपको युद्ध के साक्षी के रूप मे प्रस्तुत किया है। अन्तिम क्षण तक घेरे मे रहने के बाद उसने अपने प्राणो की इसी उद्देश्य से रक्षा की कि वह अपने स्वामी खीची-राज की शौर्यमयी घटना को अमर कर सके। कृति की शैली पुराने ढंग की और कुछ पेचीली सी है। इससे भी शिवदास का समसामयिक होना ठीक प्रतीत होता है। किन्तु कृति के तथ्य काव्यमयी अत्युक्तियों और कल्पनाओं से बहुत कुछ विकृत हो चुके हैं। उदाहरणस्वरूप में हम उन प्रसंगों को ले सकते हैं जिनमें यह वर्णित है कि दिल्ली के शासक ने—जिसका नाम आलिम गोरी ? था—स्वयं आकर माण्डव के पातिशाह की सहायता की और उसकी सेना मे अनेक राजपूत राज्यों के दस्ते भी सम्मिलित थे।"

टैस्सितोरी महोदय के इस लेख के बाद जो कुछ वचनिका के विषय में लिखा गया है वह—जहां तक मुझे ज्ञात है—प्रायः उपर्युक्त कथन का ही भावानुसार रहा है। ग्रन्थ को स्वयं हाथों में लेकर बहुत कम विद्वानों ने

इस कथन के तथ्यातथ्य को जांचने का कष्ट उठाया है। इसके सम्भवत दो कारण हैं। एक तो टैस्सितोरी के कथन की सार्वत्रिक मान्यता और दूसरी ग्रंथ की दुर्लभता। तीसरा कारण सम्भवतः यह भी रहा है कि मुद्रित न होने के कारण ग्रंथ दुष्प्राप्य है।

जहां तक ग्रंथ के प्रतिपाद्य विषय का प्रश्न है टैस्सितोरी महोदय का कथन सर्वथा ठीक है। इसमें गागरोण[1] के स्वामी अचलदास खीची के अन्तिम युद्ध का ही वर्णन है। किन्तु यह कथन कि शिवदास और अचलदास दोनों प्रायः अन्त तक घेरे में रहे कुछ संशयास्पद है क्योंकि इसके प्रमाण में निम्नलिखित दोहा ही दिया जा सकता है —

पाल्हणसी पधारीयौ अचलह अम्मी पास।
रावजी डेरा रहेसी मोरहा नाम रह सीवदास॥

इसके दूसरे पद की भाषा वचनिका की भाषा से भिन्न है। इसके अन्त में कुछ विचित्र टीप्पिण हैं जो वचनिका के अनुरूप नहीं हैं। अन्य साक्ष्य से भी शिवदास का दल में रहना सिद्ध नहीं होता। पृ. १७–१८ में उन प्रमुख व्यक्तियों का वर्णन है जो दुर्ग में उपस्थित थे। राजपूतों में पाल्हणसी महीराज भीम वीर, माधव पाल्हण बाहड़ जगमालसिंह, रायघर रूपराव आदि थे।[2] ब्राह्मणों में व्यास शारंग और नारायण थे, वणियों में हरपति साह नाना और बाला, भाटों में गंगा त्रिलोकसी तथा चारणों में माधो सांपो और नापो बारहट्टों में लाड सेउ। इनमें शिवदास का नाम नहीं है। केवल सेउ से शिव का कुछ नामसाम्य है जो दोनों शब्दों का ऐक्य सिद्ध करने के लिये पर्याप्त नहीं है। सेऊ संभवतः 'सेवो' का रूप है न कि शिव का।

---

१ नैणसी ने गागरोण की स्थिति पूगी से १ कोस छोटे से १ कोस और मऊ से ४ कोस दी है। यह भी लिखा है कि गागरोण के दुर्ग को अचलदास ने बनाया था।

२ इसमें राजपूतों के सब नाम नहीं दिए हैं।

अतः यह असम्भव नहीं है कि उपर्युक्त दोहा किसी पश्चात्कालीन चारण कवि ने ही प्रक्षिप्त किया हो।

किन्तु शिवदास अचलदास के अन्त तक गढ़ में रहा हो या न रहा हो यह अवश्य निश्चित है कि उसके और अचलदास के समय में विशेष अन्तर नहीं है और उसे तत्कालीन राजनैतिक स्थिति की पूर्ण जानकारी थी। उसने कभी कल्पित नामों की भर्ती नहीं की है। उसके काव्य में कवि समयानुमत अत्युक्ति है, किन्तु उतनी अधिक नहीं जितनी टैस्सिटोरी महोदय मान बैठे हैं। शिवदास ने केवल पांच मुसलमान सेनापतियों के नाम दिए हैं। वे सब ऐतिहासिक व्यक्ति थे। इनकी और अचलदास की समकालीनता प्रायः स्वयंसिद्ध है। गजनी खां उस्मान खां पहाड़ खां और [illegible] खां मालवे के सुल्तान अलपखान के (जो हूशंगशाह के नाम से भी प्रसिद्ध है) पुत्र थे और उमर खां उसका पौत्र। मुगीस मालवे के सुल्तान का चचेरा भाई था। जब अलप खां ने उड़ीसा पर आक्रमण किया तो वह अपना राज्य मुगीस को ही सौंप गया था। अलप खां की मृत्यु के बाद मालवा प्रायः मुगीस द्वारा ही शासित रहा। महाराणा कुम्भा का प्रबल विरोधी महमूद इसी मुगीस का पुत्र था। प्रसिद्ध मस्जिद मुगीस-उद्-दुनिया भी इसी मुगीस ने बनवाई थी।

मालव सैन्य में अनेक हिन्दू राजा सम्मिलित थे। किन्तु प्रमुख रूप से नाम केवल दो ही के वर्तमान हैं। नरसिंह की पहचान आसान है। यह खेरले का राजा था। इसने अपने जीवन में बहुत राजनीतिक दाव-पेंच खेले। कभी वह गुजरात की अधीनता स्वीकार करता कभी मालवे की और कभी स्वाधीन बन बैठता। उससे कर वसूल करना इन राजाओं के लिये एक समस्या थी। अलप खां ने उड़ीसा से वापस आती समय खेरले पर आक्रमण किया। नरसिंह पकड़ा गया और उसे मालवे की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। मालवे के सामन्त के रूप में वह सैन्य में सम्मिलित होने के लिये विवश था। किन्तु सन् १४२८ में अलप खां को उस पर फिर आक्रमण करना पड़ा। अहमदशाह बहमनी और अलप खां के युद्ध होने पर

नरसिंह ने इसका पूरी तरह से बदला लिया। अलप खां की बेगमें भी इसके हाथ आईं। किन्तु उसने उन्हें सम्मानपूर्वक वापस भिजवा दिया। सन् १४१२ में सुअवसर पाकर अलप खां (हुशंगशाह) ने केरले पर फिर आक्रमण किया। नरसिंह दुर्ग की रक्षा करता हुआ मारा गया। वचनिका की रचना इससे पूर्व हो चुकी होगी। तभी तो नरसिंह की अधीनता की अचलदास की स्वाधीन वृत्ति से तुलना करते हुए कवि लिख सका —

> ओकइ वन्नि वसंतड़ा ओकड़ अन्तर काइ?
> सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्ख विकाइ॥
> गइवर गळइ गळत्थियउ जहं खंचइ तहं जाइ।
> सीह गळत्थण जइ सहइ, तउ दह लक्ख विकाइ॥

किन्तु वास्तव मे तो 'गजराज' नरसिंह भी अपने 'गलत्थन' से प्रसन्न न था। उसे भी स्वातंत्र्य से उतना ही प्रेम था जितना अचलदास को। दूसरे हिन्दू राज्य उसकी सहायता करते तो केरले की ही नहीं उनकी स्वाधीनता का भी अन्त होता।

दूसरा प्रमुख राजा जिल्लमाविल है। यह भी नरसिंह की तरह कोई स्वाभिमानी हिन्दू सामन्त रहा होगा। नरसिंह के पुत्र वाघजी और खेमजी भी युद्ध में सम्मिलित हुए। मार्तण्डपुरी का राजा लखमराज कोई आदिम जातीय सरदार रहा होगा। हिन्दू मैवास भिल्ल शबर आदि को मारण नाम से अभिहित करते रहे हैं। मार्तंगपुरी कोई भिल्लपल्ली रही होगी। किन्तु केरले के बोड़ और मार्तंगपुरी के आदिवासी ही नहीं आसपास के राजपूत राज्य भी अलप खां की सैनिक सहायता करने के लिए तैयार थे। मेवाड़ उसकी सहायता कर सकता था। किन्तु महाराणा मोकल कुछ अल्पवयस्क था। अचलदास मोकल का जामाता था। अपने पुत्र को भेज कर उसने मेवाड़ से सहायता भी मांगी। किन्तु यह सहायता समय पर न पहुँची और अलप खां ने गागरोण को हस्तगत कर लिया। नैणसी आदि ख्यातकारों की यह कल्पना कि मेवाड़ की सेना मोकल की हत्या के कारण वहां न

प्रायः सभी कल्पना मात्र ही है। घटना के समय पर विचार करते समय हम यह सिद्ध करेंगे कि मोजम की हत्या और गागरोण के घेरे में कुछ वर्षों का अन्तर था।

वचनिका में लिखा है कि नीमाड मान्धाता आसेर, दुर्गपुर सितारपुर आदि के खान अमीर, उमराव आदि भी मालवे के सैन्य में सम्मिलित हुए थे। इसमें यहां भी कोई अत्युक्ति प्रतीत नहीं होती। अलप खां ने जब बाजपुर पर आक्रमण किया उसके विरोधी गुजरात के सुल्तान अहमदशाह ने पीछे से मालवे पर हमला किया और नीमाड मान्धाता आदि के प्रदेश कुछ समय के लिए हस्तगत कर लिए। इससे स्पष्ट है कि उस समय तक ये अलप खां के अधिकार में थे। अहमदशाह को जब मालवा छोड़ना पड़ा ये स्थान फिर अलप खां के अधिकार में आ गए। आसेर खानदेश में था। गुजरात से वैमनस्य के कारण सम्भव है कि उसके सुल्तान ने भी अलप खां की सहायता की हो।

वचनिका की प्रयाण की कथा में कल्पित है किन्तु असंभव नहीं। न उस समय सोम मानन और वाम्हड़दे थे न हम्मीर न सीहोर का रावत और न तिलकधारी का अहलोत। फिर सुल्तान की सेना किस पर आक्रमण कर रही थी? इसी विचार से सब हिन्दुओं के मन शंकाकुल थे। अन्ततः उन्होंने यही अनुमान किया कि यह आक्रमण अचलदास खीची पर होगा। और कौन था जो पातिसाह से युद्ध करे?

पृष्ठ ११-१३ में कवि ने अचलदास के विरोधी के नाम 'आलम' शाहि आलम' और 'गोरी राव' के रूप में दिए हैं। सम्भवतः इसी के आधार पर टैस्सितोरी महोदय ने अनुमान किया था कि वचनिका में आलिम गोरी नाम के किसी दिल्ली के सुल्तान का वर्णन है जो माण्डू के शासक की सहायता के लिए गागरोण पहुंचा था। किन्तु वास्तव में 'आलम गोरी' या तो 'अलप गोरी' का कुण्ठित रूप है या स्वयं शिवदास ने 'अलप' को 'आलम' में परिवर्तित कर दिया है। अलप' का 'अलम' या 'आलम के रूप में पठित

का परिवर्तित होना बड़ी बात नहीं है। प्राय लोग यवन नाम से शाहि बिन और शासन' से परिचित हैं। बजनी सों, हैबत खां आदि जिनका हम ऊपर निर्देश कर चुके हैं इसी समय गोरी के पुत्र थे।

वचनिका में इसके बाद की गढ़रोध की कथा सर्वथा राजपूत परम्परा के अनुरूप है। अचलदास की मेवाड़ी रानी पुण्यावती सावदनी लाछनी और तंवराणी ने उसे प्रोत्साहित किया। उसका सब परिवार एकचित्त हो गया। वचनिका मे इन और व्यक्तियों का प्रच्छन्न वर्णन है। सम्भव है कि सामरोम के पास पांच इन वीर पुरुषों के वंशज अब भी वर्तमान हो। दुर्ग में चालीस हजार जोर लगवाए थी अपने सेठ, वैवर भाई आदि का पुरुषार्थ देख रही थी। इसमें अचलदास की मां कछवाहे राजा मोकल की पुत्री एवं अचलेश्वर की पटरानी पुण्यावती और राजकुमारी आदी के नाम कवि ने विशेष रूप से गिनाए हैं।

सामसशाह (अल्प या गोरी) की सेना में लाखों पैदल मदमत्त चौरासी हाथी और तीस हजार सवार मानना शायद अत्युक्ति है। किन्तु युद्ध का वर्णन सर्वथा स्वाभाविक है। इसमें न अप्सराए हैं, न योगिनियां और न वैताल। किन्तु तलवार पर तलवार की चोट और लहू से सनी धरा का वर्णन उसमें अवश्य है। चौदह दिन तक यह भयकर युद्ध चलता रहा। उसके बाद सब सरदारों और सामन्तों ने सलाह की। यही निश्चित हुआ कि जौहर किया जाए और राजपूत योद्धा तुलसी की माला पहने मोहरा बचाते अचलदास के स्वाम से गोरी-साह के तम्बुओं पर धावा बोलें। इसमें इस्एक कदम का फल नहीं था को एक स्वाभिमान मात्र था। वंश को कायम रखना भी आवश्यक था। इसलिये यह भी निश्चित हुआ कि पाल्हणसी को दुर्ग से बाहर भेजा जाए। यह कार्य सम्पन्न होते हुए एक तरफ जौहर की अग्नि धधकी और दूसरी तरफ नगाड़ों पर डंको की चोट पड़ी। सर्वत्र ही आवेश था एक और पातिव्रत्य का और दूसरी ओर शौर्य का। अचलदास सोच रहा था 'अभी ग्रभिम हू गरसी (ग्वालियर का

तवर राजा जिसकी पुत्री शायद अचलदास की तवराणी रानी थी) राणा मोकल (जिसकी पुत्री पुरपावती पन्नगनी थी) रावल गइपा (डूंगरपुर का) और वीरजी हमारी कथा सुनेंगे और हमारे शौर्य की प्रशंसा करेंगे। कुलवधुएं भी निस्संकोच निर्भय जौहर की लपटों में कूद पड़ी थीं। सर्वत्र 'शिव शिव' और 'विष्णु विष्णु' के पवित्र शब्द सुनाई दे रहे थे। इसके बाद वीर राजपूतों ने अपना कर्तव्य पूर्ण किया। तलहटी पर उतर कर अचल के भाइयों भतीजों ने अच्छी तलवार बजाई। जीते जी अचलदास ने गागरोण न जाने दिया।

वचनिका की स्वल्प कथा यहीं समाप्त होती है। कथा में ओज है, करुणा है और साथ ही सत्य भी। शब्दावली का समुचित प्रयोग है, वह वाग्जाल नहीं जो अर्थ को तिरोहित कर दे। कथा का मानवीय स्तर भी दृष्टव्य है। अमानुषीय शक्तियों को लाकर कवि ने किसी घटना विशेष को घटित करने का प्रयत्न नहीं किया है। कथा स्वयं में परिपूर्ण है। उसका स्वाभाविक सौन्दर्य ही उसकी पर्याप्त भूषा है। काव्य में वर्णित यह घटना किस समय हुई? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमारे पास कई आधार हैं।

१ नैणसी ने लिखा है कि रणमल राठौड़ अचलदास खीची की सहायता के लिए जा रहा था। उस समय उसे मोकल की हत्या का समाचार मिला। इसलिये वह वापस लौट गया। यह कथन सत्य हो तो मोकल और अचल की मृत्यु का सम्वत् एक ही होना चाहिए। टॉड ने मोकल का मृत्यु संवत् १४७५ (सन् १४१८ ई०) दिया है जो अशुद्ध है क्योंकि मोकल का अन्तिम शिलालेख संवत् १४८५ का और उसके पुत्र और उत्तराधिकारी महाराणा कुम्भा का संवत् १४९१ का है। डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने संवत् १४९० को मोकल का मृत्यु संवत् माना है। इस हिसाब से अचल की मृत्यु भी इसी संवत् में माननी चाहिए।

२ खिल्चीपुर राज्य के इतिहास में इस घटना को संवत् १४८३ दिया है (राजस्थान भारती भाग ५ अंक १ पृ ८४)[३]

३ मुसल्मानी तवारीखों में घटना का समय १४८ है। मलप खान के उड़ीसा से लौटते ही गुजरात के सुल्तान महमदशाह से मलप का को कलप हुई। अपनी लक्ष्य में विफल होकर मार्च १४२१ (वि स १४म) में जब महमदशाह गुजरात लौट गया तो मलप खां ने अपनी फौज को कुछ समय तक आराम देने के बाद नामरौरा को कब्जा किया और उसके बाद ग्वालियर पर धावा बोल दिया। दिल्ली के सुल्तान सय्यद मुबारकशाह की सामयिक सहायता के कारण ग्वालियर का गढ न टूट सका।

४ शनिमिष में वर्णित समसामयिक राजाओं की तिथियों से भी घटनाक्रम का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। आषाढ़ शु ५ सम्वत् १४७१ तक ग्वालियर में वीरमदेव का राज्य होने से यह निश्चित है कि डूङ्गरसिंह उस समय तक ग्वालियर का राजा न बना था। संवत् १४८ में जब मलप खां ने ग्वालियर पर आक्रमण किया उस समय डूङ्गरसी राजारूढ हो चुका होगा। संभव इसी आक्रमण का बदला लेने के लिए उसने सन् १४३२ के कुछ समय बाद मालवे पर आक्रमण किया हो। मेवाड़ के राणा मोकल के विषय में हम ऊपर लिख चुके हैं। वह कम से कम संवत् १४८२ (सन् १४२८ ई) तक मेवाड़ के सिंहासन पर वर्तमान था। हम १४ ५ को ही उसका मृत्यु संवत् मानें तो अधिक से अधिक यह कह सकते हैं कि अचलदास की मृत्यु संवत् १४८१ के बाद न हुई होगी। डूङ्गरपुर के रावल गणपाल का सब से प्राचीन उल्लेख संवत् १४८ का है[४]। हम इसी को गणपाल का अभिषेक संवत् मानें और ग्वालियर के डूङ्गरसिंह का भी अभिषेक इसी सम्वत् में रखें तो घटना का समय संवत् १४८ से

३ श्री कुमकसिंहजी बीची का लेख

४ देखें श्री नरोत्तमदास स्वामी का लेख 'राजस्थान भारती भाग १ अङ्क २-३ पृष्ठ ३१-१

पूर्व नहीं रखा जा सकता। अनुमानतः घटनाकाल इस दृष्टि से संवत् १४८ से सम्वत् १४८२ के बीच में होना चाहिए। चौरखी शायद मालदेव सोनिगरा का पुत्र बरणवीर हो जिसका कोट सोलंकिया का लेख सं० ११६४ का है। किन्तु चौरखी की इस पहचान को हम स्वयं अत्यन्त अनिश्चित मानते हैं।

२. घटना का महीना निश्चित है। वचनिका में युद्ध का समय महाष्टमी से दूसरी अष्टमी तक हुआ। यह महाष्टमी आश्विन शुक्ल पक्ष की अष्टमी है।

ऊपर निर्दिष्ट सब प्रमाणों की उचित संगति युद्ध को संवत् १४८० की आश्विन शुक्ला ८ से कार्तिक कृ० ८ तक रखने से हो सकती है। अचलदास के सब समसामयिक राजा इस समय वर्तमान थे। मुसल्मानी तवारीखों के अनुसार भी संवत् १४८ की शरद् ऋतु के आसपास ही इस युद्ध को रख सकते हैं। खिच्चीपुर के इतिहास और नैणसी की ख्यात की तिथियों में स्पष्टतः तीन चार साल की अशुद्धि है।

हम ऊपर वचनिका के वर्णित विषय का कुछ विवेचन कर चुके हैं। इससे अब उसे अत्युक्तिपूर्ण मानना भ्रान्ति होगी। प्रमाणों की कसौटी पर कसने पर उसकी सभी बातें खरी उतरी हैं। कवित्व के नाते रचयिता कुछ अतिरञ्जना के लिये क्षम्य है। किन्तु वह अतिरञ्जना क्षम्य है। अलप खां[1] वास्तव में दिग्दिगन्त का विजयी न था। जीवन में उसे सदा विजयश्री भी न मिली। किन्तु उसने उड़ीसा तक धावा मारा था। उसकी भील का यह आडम्बरमय अभिमान दिग्विजयिता का नहीं तो दिग्विजीषता का अवश्य प्रत्यक्ष प्रमाण है। मालवे से लगे राजस्थान के अनेक भूभाग अलप खां के प्रभुत्व को स्वीकार करते थे। आसपास का कोई मुसल्मानी या हिन्दू राज्य न था जिससे उसने लोहा न लिया हो।

---

१ तारीखे मुबारकशाही ने भी इसके प्रसिद्ध नाम हुशंगशाह को छोड़ कर 'अलप खान' को ही प्रयुक्त किया है।

राजस्थान का यह सौभाग्य था कि मालवे में मुसल्मानों की इस बढ़ती शक्ति को रोकने के लिए मदनाय ने कुम्भकर्ण जैसे वीरप्रसवों को उत्पन्न किया। वचनिका के साक्ष्य से सिद्ध है कि हाडोती खीचीवाड़ा सिरोही आदि के प्रदेश मालवे के प्रभुत्व को मान चुके थे। हिन्दुओं को महाराणा कुम्भा का नेतृत्व न मिलता तो यह मुसल्मानी प्रभुत्व स्थायी होता।

वचनिका से यह भी स्पष्ट है कि पंद्रहवी शताब्दी का राजपूत अपनी स्वतन्त्रता और संस्कृति की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति दे सकता था और राजपूत संसार में ऐसे व्यक्ति के लिए सम्मान था। इस तरह प्राणों का उत्सर्ग करती समय वे स्वयं किस अपूर्व गर्व का अनुभव करते थे। अचलदास को मन ही मन में इस बात की खुशी थी कि भोजराज हम्मीर महपा बीरजी आदि राजा उसकी जौहर की कथा सुनेंगे। हाडों खीचियो सोलंकियो में उसके अद्भुत शौर्य का बखान होगा और सभी उसके जौहर की हमीर, कान्हड़दे सातल सोम आदि के जौहरों से तुलना करेंगे[१]। सामन्तो के लिए ऐसा अवसर महान् पर्व था। पद-पद पर अश्वमेध के फल की प्राप्ति और कहां हो सकती थी?

किन्तु वचनिका से हम राजपूतो के महान् गुणों का ही नहीं उनकी कुछ कमियों का भी अनुमान कर सकते है। संगठित होकर शत्रु का विरोध करना तो राजपूतो ने प्रायः सीखा ही नहीं है। मुसल्मान एक हिन्दू राज्य के बाद दूसरे हिन्दू राज्य पर आक्रमण करते। निरीह जनता भाग कर दुर्गों में घुसती और आक्रमक का साथ देती। किन्तु आस पास के हिन्दू सरदार या तो उदासीन रहते या बरजोरावत सामन्तों के रूप में शत्रु का ही साथ देते। जो राजपूत स्वाभिमान की रक्षा के लिये मरने मारने को तय्यार था वही दूसरे के स्वाभिमान को मानों कुछ समझता ही न था। राजपूतो

---

१ इन वीरो के चरित्र के लिये Early Chauhan Dynasties देखें।

में शक्ति थी किन्तु अलग-अलग बिखरी हुई। इन समस्त शक्तियों को समष्टि रूप देना महाराणा कुम्भा का महत्त्व कार्य था।

महाराणा कुम्भा के इस महान् कार्य पर हम यथेष्ट प्रकाश डाल सके हैं।

भाषा के अध्ययन के लिये भी वचनिका में पर्याप्त सामग्री है। राजस्थान के पुराने गद्य के अच्छे उदाहरण भी मिले हैं। किन्तु वचनिका का चारणी पद्य अपना निजी स्थान रखता है। इसे पढ़ कर अशोक के अभिलेखों तक की याद आती है। जिस तरह अशोक स्वयं अनेक बार प्रश्न करता है, 'हुं तं इच्छामि किंति' 'अप पवाये इच्छामि किंति' 'समवायो एव साधु किंति' और स्वयं उसका उत्तर देता है उसी तरह वचनिका भी 'कवण घर तउ किसउ ?' 'कैस तउ करण-कारण' आदि प्रश्न करती हुई उनका उत्तर देती है। चारण साहित्य में यह शैली और विकसित हुई है।

वचनिका के अन्य पक्षों पर मेरे अनेक समादरणीय मित्रों के विचार पाठकों को पढ़ने के लिये मिलेंगे। अतः अलं पल्लवितेन।

'नवीन वसन्त' कृष्णानगर
ता० १-४-१९६१

दशरथ शर्मा

गागरोणगढ़ का एक दृश्य

जपइ तुहाळइ कालि ब्रहब्रहिया डम्मरु डणा ।
धाडे मसुर सु माळि सइ वा मारथि वीस-हृथि ॥४॥
रामाइण ही राम कीमत जे हूती कन्हइ ।
सकति विहूणउ स्याम विडण न होयइ वीस-हृथि ॥५॥

२ वात

हसी ताइ देवी । बग साहण पूत परिवार, उवउ उछाह दवणहार । तास गुण नमो कमणाइ ।

वैणा पुस्तक धारिणी कासमीर कंवरि वसति गीत नाद गुण गाहृ दियण देखि कवियण वियति ।

१–४ वर्पं o धुपं d । तुम्हरं od । कंटक तर्हे न काल b । ब्रह्मब्रीमा डमरु od । मसुर न वैती माल b मसुरि न छोडी मालि od । बलुधा मारन b सिया वा मारथि बीसहथ od ।

टि०—(b) में छन्द नं ४ और ५ के बीच में यह छन्द है—
केरव कोड मिलेइ विठ्ठो है ना पुस काहि ।
पांचे ही पांडव कइ वासै हु ती बीसहथ ॥

१–५ रामायण od । कीधी वो हुती कन्हे od । विहूणो od । सामि od । होवै बीसहथ ।

२ अथ वात od ।
त्या देवि a । बस मण ताइण b । बस साहणा od । पुत्ति o । परवार a । उदी वछाह o उबी उछाह d उवउ a वर्ष छाहव की । देवणा हार od देवणहार b देवणहारि a । ताप बण न (?) ? a तासु गुण । नमस्कार नमो b × od ।
वैणा b वीणा od । कासमीर od । वसन्ती od । गाहा od । दीयण b दीयण od । देख bod । कवियण वीयती od ।

५ दूहा

उत्तर-दक्खिरण देस पूरब नइ पच्छिम तरण ।
खडिया खउदालिम-कटक नमिया सकळ नरेस ॥ १ ॥
हलकंप हिंदूकार घर घर प्रति हूवउ घरणउ ।
मिळियइ मरूप राइ-कइ कुरण ऊमरइ कुमार ॥ २ ॥
तइ पतिसाह तरणेह पायारणउ पारंभ सुरणी ।
हसहसिया हेकारणवइ गढपति गमे-गमेह ॥ ३ ॥
तइं संचलतइ सूर घू धळियउ घर धमधमी ।
खउदालिम खीची दिसइ कियउ पयारणउ पूर ॥ ४ ॥

६ वात

इसी परि त्या खउपासम मोरी राजा बारह सस मासमा रउ चकरवरती । तइ रइ तेयारणू साख मामभा-रा कटक-बंध ।
तइ कटक-बंध रउ प्रारंभ पारस गरवावन गढागरउ ।

---

५ १ ईश्वरि हिंदूकार od । पति bod हुवा b हूवा od । घरणा bod । मिळीया मोरूपरास का od । कै ऊमरैं od ।
५ ३ तरा b तै od । पायाणे od । सुणे od । हसहसीया हेकारणवै od । गढपत bod । गमागमइ b गमागमै od ।
५ ४ तइ b तौ od । संचरतै b संचरता od । सूर od । धमधमीया od । सू खालिम od । दिसा od । कीधा पयाणै पूर od ।
६ त्या bod मे नहीं है । खू खानम od । मोरी od बारह b । सास od । तर न तिहरा b तेरै d । मासनै का चकवर्त तेरै तेयाणू साख d (o मैं यह पंक्ति नहीं है) । मामने रा od ।

तइ कटक-बंध मांहि तउ कहइ विसासउ । महाभर तउ कवण-कवण ? उसमानखान फतेखान गजनीखान उमरखान हुसबतिखान । खान तउ मुगीस सारिखा ।

हींदू राजा कवण-कवण ? सकल ही सकल-बधी सकल कला सपूरण राजा नरसिंघ सारीखा । तइ नरसिंघदास-का कटक-बंध चालिता सायरि मागलइ दलि पाणी पाछिलइ दलि कादम । तइ कादम-कइ ठाहि खेह उडती जाइ । दूसरउ विक्रमादित ।

७ दूहो

भेकइ वन्नि वसतडा भभड़ भतर काइ ? ।
सीह कवडडी नह लहइ गइवर लखिस विकाइ ॥

तइ कटकबंध एव प्रारंभ प्रारंभ od मे नही है । पुरसातंन पराभव od मसाण गरवातन b । तइ कटकबन मांहि तउ—इतना मत od मे नहीं है । कहि कहि od कहु कह b । विसासु d विस्सासु o विसासाउ छै b । तिण कटकबंध माहे कुण कुण b कटकबंध माहि तो महाभर कुण कुण od । मीया उसम खां od उसमखान b । फतेखान हैमतखान गजनीखान od फतखान उमरखांन गजनीखान ममगखान पैरोजखान b । खान है मीया मगसीस सारखे b खांन तो मीये मुगसीस सारिखा od । और तो हींदू राजा कुण कुण od । वे कुण कुण b । सकल ही कला सपूरन सकल ही कला सरबंधी od । नरसिंह od नरसंघ b । चालता सायर पू od । सायर b । आगला दला पाणी od । पीछला दला दम d पीछला कादम o । है कादम के मांहि od । उड़ a । उड़ती od । दूसरा विक्रमाजीत od दूसरो वीक्रमाजीत b । दूसरउ a ।

७ भव कु वसीया od । वनवसि भंग वसंतडा od । भेकडो भंवर नाइ od । कवडी मां नहीं od । गयवर लख विकाइ od ।

८ कुंडलियो

गइवर-गळइ गळत्थियउ, जह सचइ तह जाइ ।
सीह गळत्थण जइ सहइ तउ दह लक्खि विकाइ ॥
तउ दह लक्खि विकाइ मोल जाणवि मुंहगेरा ।
कउवा कारणि कथिन कोपि कउदालिम केरा ॥
पेट कीध पडियार निहसि कट्टारउ दुहु करि ।
राइ न महउ नरसिंघ गळइ गळह्थ अउ गइवरि ॥

९ वात

ते राजा नरसिंघदास सारीखा । बतीस सहस साहण रिण-भेति मेल्हि चाल्यउ । मदोनमत्त हस्ती मेल्हि चाल्यउ । श्रापणउ भाइ सर्वदइ चाल्यउ । समद भाइ छोडउ पवाणियउ । अनेक राइ मद-गालित करि मेल्ह्या ।

---

८ गयवर गल गलपीयो od । जहा जिसे तहां od । लाल्यस्य od । सही od । तो b तो od । तब लाखे बिकाय bod । तब लाखे बिकाय od । मोल जाने मुहूंगेरा od । कवूवा od । कवण bod । कोप कु दालम केरा od । पेट कीट b पेट किया od । निहसि od भेक b । कटारो od । दुय कर od । राम नरसिंह न सही od न सभी राव नरसिंघदास b । मर्द bod । गलप b । ज्या b जिम od । गैवर b गयवर od ।

९ सारखा बत्तीस हजार रजपूत-ही-राजपूत मिल चाल्या b । साहण' हस्ती मेल्हि चाल्यउ—इतना b मे नहीं है । आपण्या b । मदमस्त मालवा b ।
यह सारा पैरा od में नहीं है ।

ते राजा मर्रसिंघदास सारीखा ते राजा मर्रसिंघदास-का कुंवर तउ चांदणी खेमजी सारीखा । मालगपुरी का चक्रवती लखमराव सारिखा । ... दवसीह सारिखा । बूंदी-का चक्रवती भवर देवड़ा हीरू राइ वदि-छोड दूसरा मालदे समरसीह सारिखा ।

देस तउ कउण-कउण ? सतियासी नमियाइ चुम मानधाता मासेरि बूमउर सिसार पुर भगइ-का कटकबंध । मम-देस तउ मांडव धार उजीण सीह ... खड-खड का नगर-नगर का खान मीर अमराव चतुरग दल चढि चाल्या पातसाह मापुणपउ पलाण चाल्या ।

---

5 ते राजा मर्रसिंघदास सारीखा—इतना bod में नहीं है ।
मर्रसिंहदास od । मर बेटा bod । खेमजी a । सारखा b सारिखा od ।
मलपुरी का चक्रवती लखमसी सारखा संमरथमसी सारखा भवर ते देवड़ा चवीछोड राव दूसरा मालदे समरसी सारखा b चली का चंदेरा देवसी सारिखा मालव पुरी का चक्रवति लखमराव सारीखा मीर ते हीरू राजा दूसरा मालदे समरसी सारिखा od मालपुरी का a पउली चावड़ा देवसीह सारिखा a ।

5 मघ देस ते कुंण कुंण od । सतमेल घम मीमाड b । ममीयार od । पुरा a, ×b । मासेर bod । दुमोर b दूमीर od ।
मीमोर ईमोर सीहोर धमखेरा चोली पटोली चरदा देवार पुर माडव धार उजेण इसमाबाद सीहोर री नुप सारा नहैं b ईडोर मीमोर ते धमधस चली पटोली लच चा माडव देस धार उजेण सीहोर सापावार od । खंड खंड का खान मीपा अमराव b इसा इसा ते पातिसाह का कटकबंध राजा चक्रेसर ऊमरि चढि चाल्या पातिसाह मापणपै पलाण चाल्या od ।

१२ दूहा

भालम का मढ़साळ ईसे गूजर भासमा ।
गढ का गा गढपति कन्हड़ ग्रघ भर तरणा माळ ॥१॥
हुव साहियउ न होइ मरण हुवइ गढ मल्हियइ ।
भासइ भपळे सर ध्रसउ सत मेंहहु स सहू कोइ ॥२॥
गढ गरवाई गांव लेसउ जाइ सका लगइ ।
चांदउ हो चाले नहीं गढ तजि गोरी राव ॥३॥
ऊचा दुरग भसेस छळि बळि निरणाहि म न छुट्टही ।
लीधा वळि लागी करी साहि भालम साहि देस ॥४॥

नापा od । मन्हू od । ग्रघ तरना मर माल b निव तारण
मै माम् od । र > मर a ।

१२ २ हुवि साहीये न होइ od । हुवे od । मेसहिमें od मेल्हियां b ।
माले od । एलो od इसी b । सत माहो od सव मंबी b सन
महुन a । लोहू गोय b ।

१२ ३ गरवातन bod । गाम od । लेसी बाइ मंवा लगे od । चांदो od ।
चाले od । रूठै od रूठे b > गढ तजि ।

१२ ४ दुरग a । नहीं न छूटीये od नणी न छुट्टी b छुमी a । मापे
करे od । लीधा वग मागिर करे सारणम दसई देस् b ।

(b) मे दूहा न ४ के धागे मे दूहे अधिक है—
मो बीसरी भाग भर पसि् अेंती भावसे ।
माह भासम संनमुख हुवो रिप स्या स्या ही ज राव ॥१॥
हपता हीदूमार कंध न कोई भटपे ।
भसि सौसासम भारुह मास हीसी धीयार ॥२॥

सगळउ ही संसार भाइ जि भालम भारिणयउ ।
भवरण-पुरउ ज्यउ-ज्यउं करइ किहू सउ कळा कमार ॥५॥
तरणी पटउळइ भांति कवहिं न पड़ई कांमळइ ।
सर गोरी राव भयउ सरइ जिहिं कइ भाति न पांति ॥६॥
साहण लाख म साग पाइदळ पार म पामियइ ।
गुढियइ गोरी राव-कइ मइगळ सबळ अपार ॥७॥
भचळेसर भरणपार पळ सजियउ सारण तरणउ ।
संका लेयरणहार काइ गोरी राव गागुरणि ॥८॥

माले गढ पति ईम भोइ आवै भ्रमां छूटवो ।
गरवा गोरी राव की साव मभंप लग सीम ।३॥
मिथी विलागी पाव भारंभ तज भचळेसर ।
विच डीसी भर देवगिर मीखीया मांडवराय ॥४॥

१२-५ विमलो ही od सेवू दूजी b । भालम माइ न भारणीयो od भालम भारवै भारणीयो b । भवणपुरो ज्यु ज्यु करै b भवपुरो कीइ कीइ करै od । सीमु कला तस्य कमार b सिलोइकमाल कुमार od ।

१२-६ तणी पटोला मांति od पडै पटोला मात्र b । कब ही न पड़ै कवले b कबही न पडै कांबळै od । सरि गोरी राव हुआ करै od हुओ गोरी राव हर करै b । जे री भात न पाति od जैरी कांड न पांत b ।

१२-७ लाखां सार bod । पैदल aod । पामीयै od । गुडीया गोरी राव रा od मिलिया मालव रा ना b । मयगल od ।

१२-८ सजीया od । तणा od । सु संका लेयणहार od । काका b रा od । गागरिणा od ।

मालम तइ मायाह विग्रह हुयइ कीधइ विडरिए ।
मचळेसर गढ मवक्षे जिव स मोकळि जाह ॥ ६ ॥
तउ लुंवर दिसि तारिग कम काहि कछ्वाहां दिसइ ।
मचळ ! मङ् मालम सरिस मेंत मापरउ न मारिए ॥१०॥

१३ वात

तिरणइ वेसा तिरणइ तालि राव राणा सुहड-सांवत सहु-को राजा मचल सर हुइ परीक्षावइ छइ । राजा परीक्षमउ परीक्षइ मही । सू काइउ कहइ—

१४ दूहा

सजि माया सुरितारा मागी मग माखइ मचळ ।
गढ-थी गढ मेल्ही करी चालि न गच चहुवारा ॥ १ ॥

१२-९ तू od । विगइ करि म करि ख विग्रए od पीगइ मत कीधो विधन b । मौखो od मोखो b । वीस a od । मोरुम od ।

१२ १ ए तुमर दिस ताएि od । तु b । कम काइ कछवाहा दिसी od । मो b > मो । मन a । मापरो od । म मारिस od ।

११ मठा पाची वात a मथ वात od वचनाम b । तिरण वेसा तिरण वार od तिह वेसा तीह वाल b । गवपत का पाव राणा b । राणी od । सामंत od । सहु कोई od, × b । मचलेसर पुं पूर्व परीक्षवै छै d मचलेसर हे परीक्षपणा मावा b । राजा मचलेसर d × b । परीक्षमो परीक्षे नहीं d । यू od में नहीं है । कांइ कहै d । तपइउ कहै छै ।

१४ मठा माची दूहस a पाया दूहा b दोहा d ।
सजि मायो d सजि मायी b । सुरताण d । माग bd ।

नवइ न स्रीची नींथ गढ-घी गढ मेल्ही करी ।
ऊड्ड हुयी उपरावठो सीष गयी तजि सींव ॥ २ ॥
लेखइ कुळ की लाज साज लोपि लोकेसवर ।
स्यामि-कथन भायी सुराग्ग तणी मोजाउत मान्ति ॥ ३ ॥
सहु गढपति स्रीकार मड स सुहारइ भावराइ ।
मनि मान्यउ मोकळ-सधू मसद भलउ भरथार ॥ ४ ॥
सामी ! तू सर-जाळि पइसिस पुहपाई कहूइ ।
हुउ उजाळिसि भापरणा त्रेवे पख तिरिण ताळि ॥ ५ ॥

मावे d । करान गढ धारे करे b । मेल्हे करे d । कोइ d मारे b (मामि न के पहुले मधिक है) । मको d ।

(b) में दूहा नं २ के मागे यह दूहा मधिक है—
मन माहेत माह कोय मामो सुख मीनंग करे ।
मा गढ मोर्द्धस्यै मरग्ग काय कसि पाखार हाम ॥

१४२ नमे d । नीम bd । गढपति गढ कार करे b । मेल्हे करे d । उमड़ हुवे bd । उपराठि जो d । तब तजे तद सीम b तिम मार्ग तजि सीम ।

१४३ लिखे d । कुल की b । लाज ad । लोपे लोगेसर तणी d > लाज लोपि इ । सामि d । पायी d । मोजाउत माज d ।

१४४ सहु d । सिरदार d सिरदार b । तुहारी भामणे d । भामणी b । मंन मंनियो d । पुत्र d । भलो भलो d ।

१४५ सामी d मांई b । तू b × a । सर जाल b । पैसिस तू पावक मही d । उजवालिस पख मात रा d । तिण मैं पेख ताम d ।

महु वेलुक वरसत कोटे मच्छवाही कहइ ।
तो भाभी होइसउ तठइ हुउ कोसीसां कथ ! ॥ ६ ॥
भलउ मत्र भडि वाहु बोलइ सामुलि वागुकरिण ।
सउकि सरणउ पीहर सदा हुयइ नि-समावच नाह ! ॥ ७ ॥
नाह तरणउ नर-लोइ मिस जारिगयउ महा-सती ।
मन मेल्ही मेलयउ उदक तूवरिरणी दिन दोइ ॥ ८ ॥
मति लहयउ तदि भाप करपायउ करपी करी ।
चांदउ ही चालइ नहीं यटा मयछाडि बाप ॥ ९ ॥
नीगमियउ मनि माहि भाई घरि भोभा तरणइ ।
प्रजा कीध मन पामरा मरण देखि मरिवाह ॥ १० ॥
वापइता विरदैत छलि घरि कुळी छत्तीस सहि ।
पाल्या स्वामि समारणसा सउ मारणस सासैउ ॥ ११ ॥

१४-६ महु वेलच वरसति d बोइ बोले मुख मान b । कोट d । वही d ।
तु भाभी d । हुसइ तठै b हुसि कठे d । हुं कोसीसे d ।

१४-७ भलो मंत्र भलवाइ d भलै मरंस मिलवाइ b । बोले सावली d ।
सोक तरणो d । निरवसो हुवै नाह d ।

१४-८ तरणो d तरणै b । निरमोय b । चालीयो d । मंच परवे d ।
परवे उदक d लीघो उदक b तुंबर मल दिन b तु मरि मंन दिन d ।

१४-९ मन लह्यो b मति लह्यो । तव ab । करपायो करपे करे bd ।
चालो bd । मुचि b > ही । चाले bd । बेटो मेल्हे बाप bd ।

१४१ नीगमियो घर माहि d नीगमीउ मनि माहि a नयै ठ मनमी
नाह b । मारी b । तरणी d तरणी b । प्रजा ही कीध b । पामरो bd ।

अेक पाल्हा की पूठि पूठि अेक पातल सरणी ।
ओलिगाणा आगी हुवा अति दिन वेळा ऊठि ॥१२॥
ज्यउ जेथ तिरिण वेळा हुवउ तठइ ।
वस पति को विहड्यउ नहीं तेथी अवसाडि तेथ ॥१ ॥
निरखइ अमळ निवार सुरां गुरू सुरिणइ उदइ ।
अेकरिण दिसि आया असुर पह हुजी परिवार ॥१४॥
कळि पाळट मरणीक मातल सोम हमीर जिम ।
गढ अनियइ गोवां तरा मिळइ राव मरणीक ॥१५॥
मिळतइ मेछि कधारि पह मिळतइ परिवार-कइ ।
सगळउ घर सींभरण सरणउ आइ मंडयउ अहकारि ॥१ ॥

---

१४ ११ वार्पता d । घ्रम घर मंस कुरीष ही bd । चढीमा b । सामि d घाम b । समासासा bd । सहुम मेक d सहस मीस b ।

१४–१२ पाल्हपा d । पूठी d । उलगाणा आगे हुवा d । मउ bd ।

१४–१३ जाइ जीव को जावेत d ज्यउ की जीमड़ पेम a । तिरा वेला हुवा तठे d । कोई वेइ d । मौखम d ।
(d मे तीसरा चरण दूसरे चरण से पहले है (b) में यह दूहा नहीं है ।

१४–१४ हरिजइ a सुरव b । गये b । चीजी b > दूजी ।
यह दूहा od मे नहीं है ।

१४–१५ कलि पलट्टर मरणीक b । माता तथा b । मिल पासा मरणीक b । यह दूहा od मे नहीं है ।

१४–१६ कधारि a कधारि b । सांभल b । धाम धणी महकार b । रहि कारि a । यह दूहा od में नहीं है ।

मयी धजा-पताका । सोवन-मइ कलस आवास चूडि-मंडप आगलरि मावरपउ । ७

तइ छत्र पाट सिंघासण-कउ राजा अखमेसर चंवर ढुलसउ किसउ मेक मीकउ देखियइ, किरि सातम सोम हमीर विसेसियइ । ८

१६ गाथा

बारह् सयस त छह वस पइदळ ।
मयिमत्ता चवरासी मईगळ ॥
साहण सहस तीस अर तेरह् ।
मालमसाह भड़ी मत्त-फेरह् ॥

चूडीमंडप चौसहरि मवर पंख संपीसिर पुत्र रिप मंडप b । मवलमिरि a । मावरपउ (bd में नहीं है) ।

१२ ८ छत्र पाट सिंघासण सहित राजा मयमेसर किसी मेक मीकी देखीयै दै d संचास को पवतार छत्र पाट संघासण राजा मयमेपुर देखीयै b । किर bd । विसेमीयै b विसेमीये से ।

१६ मव पातिसाह् का दोमा । चमरमत्ता ।

पैदल बारह मनु पैदल b । मैमंता चौरासी मैगल b । तेरह b । मालम साप मडे बिहु फेर b ।

पाहिर बारह सम्न प छेवट पयदळां ।
मद बहुला भयमत चौरासी भयगळां ॥
साहंस सहस छतीस अने अन तेरहां ।
परिहां आलम शाह बाद्या पी फरुवां ॥ d ।

१७ मव पातिसाह को विरदावली बात d बचनका b ।

दिन राति न जाएइ दूसरी नींद भूख त्रिस वीसरी
अउदालि सीची सरो, सेन बिन्हे इम समिरी ॥ २ ॥

१९ गाहा

इणि पर सहस सहस दुइ तुट्टइ ।
पगि पगि अडइ न पग अवहट्टइ ॥
आलम—अचळ—सेन आवट्टइ ।
कमक जिहीं रहि—रहि कसवट्टइ ॥

२० दूहा

आलम अचळे सरि अडपां यही अेक अवक्क ।
पिड़ि जेता हींदू पडइ तेता सहस तुरक्क ॥

---

१८ २ ग्रेक है ऊपरी d ग्रेकु कै परी सर पुरी संचरी b । नमां नम d नमि नमै b । ग्राइ ठाइ ठरी d कूट करकरी लिखहां खोसरी b । दिन रात ab । जाएै d जावै । दूसरी b बीहरी d । अहंदामिमी a मु दामिम d । हेती परि d > बिन्हे इम । संचरी d समरी b ।

१९ अथ गाहा d ।

इण परि सो d । सीस सुटी b इस सुटइ d । पगै न पग आवहट्ट d पगै न पग पावटे b । आवटा d आवटे b । कमक जैम रहि गवबटे b । गवताइ d ।

२ दोहा d । आलिम अफलैसर d । अकब्बां a अहां b । ये कही मही अवक b पेड़ जेता सहस d । जैत b जेता d । हिंदू b । पठै b पठे d । तुरक d ।

इतरइ आसउवे मउ गागोरणउ नहि छइ—सो नाहि हो ठाकुरे ! इसउ कीजइ, अब आरात्रा की आर फिरी छइ ते पुनरपि वरावबइ, भाभे पाटा बांधिजइ दु-हुपि उठिजइ, मूल उडइ घासिजइ, गजदस गाहिजइ पिसुण आसमसाह सारिखउ घाहिजइ, नाहूँ आपुणपउ निरखा ही सुकाविजइ । ४

नितरइ नापू डोड डूंगर आमडी कहइ छइ—इसउ नही हो ठाकुरे ! इसउ कीजइ—गसइ सात सइ सालिग्राम तुलसी की माला घातिजइ, अचल सर-का आवास-माइ लोहडउ करता करता गोरी राजा-का गूजरहर आइजइ जितरा-जितरा पग

---

२१४ नितनी येक बोलता हुवा आसवेव आया अब परवान d वसा मोही नायी डोड डूंगो आमडी बोलता हुवा b। वसी नही ठाकुरा वसी कीजै b यु नहीं हो ठाकुर यु कीजै d। आरात्रा की पुनरपि आर बुलायजै b पुनरपि आरात्रा की आर फिरी छै सो समराइजै d। फिरि a। भायसा पाटा बंधायजै भइ सू उठ सुगलां कै घासजै घम दस गाहिजै पिसण वल् पालिजै b भायन भाषा की उठण कीजे गजदल् गाहीजे d। पिसण वी सुरताण गोरी पातसाह सारखा पै बोपजै पासली भी पुरवारत चाहिजै b पिसुन तो साह आलम सरिखा चाहीजै नर मार्ड आपणा सुकाईजै d।

(d) में यह अंश अगले अनुच्छेद के बाद में है।

२१५ नितनी येक बालता हुवा नापू डोड डूंगर आमडी d वसा मोही समि-रिमल नामी बोलती हुवी b। वसो नही ठाकुरा इसो कीजै b यू नहीं हो ठाकुरे यु कीजै d। मर्न सत सइ सि सालिगराम तुलसी रा माला पहरजै b मने सत यु सालगराम तुलसी की माला घालीजे d। राजा अचल सर का बीलहरा मु लोहडो करता करता सुरताण गोरी पातसाह का गुजरी आवजै b राजा अचलेसर का आवास की लोहडो कीजे d। करतां ई करतां जितना पग दीजे

गोत्र-सवासणी तउ थाई ऊभी । मे तउ कहीमइ वापुला भाप कारिखी भाप-सवारथी । भापणपउ ही ज कियउ भिउ भागणइ, भापणपउ ही ज बोल भागी भारणइ । पिण कबीर न बीपइ कनक-हूइ मे तउ न बीपइ हम-हूइ । सिव-सगती सम भुगती । सिव हारयउ बीत्यउ सगति । मे वडी भबाइ हूइ कवण गति । पू मम्हे मूवां-की गैम मरां माइ-बाप वीसरा तौनि पच ऊभगे भवइ यउ मभिमान कउण-सउ करां । इन-मन्ड सउ तेज महकार देखतां दिहाडइ दस भवइ बीस हुवा छइ । न ये हमारउ सउ तेज महकार देखइ न हम हू समारइ । ८

(राजा कहत है)—मानवी-का कहा रे बावली हो ! तेतीस कोड़ि देवता सहित सिरजणहार, स्यउ तुहारइ कउतिग

---

२१ ८ यह महम तो थारै सवमावै d । तो d । थसी d । पोम सुहासणी वो d । ब्या a । (b) मे यह यंश नहीं है ।

मम्मा सु गहे के रे मार्ई तुहे थाप स्वारथी थाप सवारथी तुहे थाप थापणा तुहे थाप ही ना कीया थाणो थाप का बोल्या थार्य थाणो d बहुला थाहरी बोसणा—थी तो कहिवै वापुला थाप स्वारथी थापणो कीथो थावी थाप ही थी बोल थावै थावी b ।

कबीर न पुथै कनक है म्या थै न पूर्वे हम है b कबीर न पूर्वे कनक हैं माहि न पूर्वे हम है d । सीव सक्त सम भुगत सीव हारो भर थीतो सक्त b सिव सक्ति समभि भुगति सिव हारथी जीतो सक्ति d । हम तो मूवा थी थार मरा जीवना थी वैरी करा माय-बाप बिसरा देव पला ऊभरां b हम मूवा थवा ना मना मारया माय बाप बिसारया थीवै थवा गुमाएया d । मे तो य यह परिमाण महकार थावयी b तुम्हारो सन तेज महंकार देखतां ही दीहाडा दस बीस हुआ छै सु वो हमारो सउ तेज महंकार सु तो हमारी हेती भार d ।

पखराणहार। हउ तउ ध्रुव चिंता-वसउ तमे काइ मानउ आपणा मन माहि अहिठ। पणइ तम्हइ पउं करउ ज्यउं जोगइ जागाइउ काइ घरि अउहर हुआ सीहउरि सोमू-काइ घरि अउहर हुआ कालिह-काइ विहाड़इ रिणथंभउरि राजा हमरदयउ-काइ घरि अउहर हुआ। तिह अउहरां जिका बात ऊणी हुयी हुवइ त्या तम्हइ पूरी करि दिखालिसउ पूरी हुयी हुवइ त्या पुनरपि चाहुवि उजालिसउ। हउ तउ ध्रुव चिंता-वसतु, तिणि कारणइ ध्रुव दु-चितु तम्हइ काइ मानउ आपणा मन माहि अहितु। ९

२१-६ ऐसा मांही राजा मलन गुर सामुह मास हाथ जोडि पुनमा प्रणाम कर बोलता हुआ b राजा कहत है d (a) में यह अंश नहीं है।

5 महाकाली हे हमारे तो तुमरो मंडप तुमरी ही संसार, मांगवी की अैष्ठ बनाई बापल्या तैतीस कोड देवा की सिरजणहार सो तुम्हारा गोत्रज की वेवसहार b मानव जन्म को मला न जानरी तुम्हारी सब देव मनुहार को वैवसहार तेतीस कोड सहित सिरजणहार d।

5 अब तो रजा कहे वे तु दीजो ए d, (b) में यह अंश नहीं है।

मंमीयाली सोम चौहाण के ही घर जोहर हुआ, जेसलमेर दुदा के घर जोहर हुआ जालजोरि करमचंद चहुआण के घर जौहर हुआ तिलक धारि नाहिलीजा के घर जौहर हुआ सीहोर सोमु के घर जोहर हुआ गढ जालोर कान्हड़दे के घर जौहर हुआ गढ रिणथंभर राजा हमीर के घर जौहर हुआ b चित्रकूटगढ पुष्पिणाल के घर जूहर हुआ थे, सीहोरि राजा के घरि जूहर हुआ थे, चाहुवाण-सोम के घरि जूहर हुआ थे हठ के राजा हमीर के घरि जूहर हुआ थे, राजा कान्हड़दे के घरि जूहर हुआ थे d।

5 वा जोहरा मन मा कही सो मे पूरी कर दिखाओ तथा जोहरा वात की पूरी तो ने पुनरपि उजवालो b अपूरी हुवे सु पूरी करिज्यो पूरी हुवे सु पनरेस उजालिज्यो d। पुनरेपि (a)।

राजा भचस सर कहइ सइ—पछ तउ बोमियउ करि विचारिजइ, भक पुरुष तउ पुरिस-काइ पछोपइ उबारिजइ। सू तउ हुउ नीसरउ न दीसउ नीकउ। चावइ त गज-घटा न फूटै। पामा पातम तउ चाइ मारी। मीग्च उहां राणा मोकलसी पासि गयउ यउ तउ न आणउ उहां-ही रह्यउ म आणउ मावलउ किही बीच ही मडासरालपउ कमउ ही। उहां बीरउ ऊमरै इहा पाल्हणसी परीक्षायउ परीक्षइ तउ राजा भचस सर कहइ, भाई हो! सबरी रही हमारी नाहि तर, राजा भचम सर कहइ सइ, भाई हो! सबरी गयी हमारी। १२

पाल्हणसीहै परीक्षाबइ रणवास भयउ लोक उदास। पाइ लागइ सइ बाई सफलादे भोज की काता भचस की जनेता कुल-बहू तउ मायी बाई पहुपाई राणा मोकम-की सार-सू। सकस ही परिवार हेता विमइ भपार, पाल्हणसी परीक्षायउ परीक्षइ नही गवार। १३

---

२१ १२ सु ती हु नीकस्यो नीको न दीसु d हु तो निकस्यो न दीसु नीको b। चावै गजघटा फूटे नही d चावै गजघटा फुटै नही b। मर पोमी पातल बाबा मारी b पोमो पातल चाइ मारी d। मर बीरो एथा मोकल-ई बुलाया गयो को सो उहा-ही रह्यो काय कही बीच-ही मडबालयो b बीरो राणै मोकल पास गया था सु उहा-ही रह्या क भावता मडासरालया d। तहां बीरो ऊमरै ईहा पाल्हणसी निसरै तो सबै बात सधारी नही तो राजा नही संभरसी बाई हमारी b पुनरेप बीरो उहां-ही रई इहां पाल्हणसी परीक्षया परीछै तो सबूरी रई नही तो सबूरी जाय d।

२१ १३ रण सवास भयर लोक उदास पाल्हणसीहै परीक्षया साथा परीक्षयो परीछै नही भो तो रण पमार, पाम बात सुफलादे कहै b रांणीवास

३२ वात

पाल्हणसी चढ्यो ही सत्यो-का गज मार मवहस्या पाखर्‍या था वठै मही पर्‍या । येकि मार्‍या येकि मोड़्या, आणि करि अड़पा ।

२४ कवित

पाल्हउ कवरणइ पडइ, कउरण जम जातउ वारइ ?
कवरण वयन झेलियइ कउरण सिरि वान सहारइ ?
अवरि किरिण अवियै भाम कुरण कुवळ आरणइ ?
उवहि कवरण उल्सघइ कउरण जळ-सस्या जारणइ ?
येसरी वात कुरण आगमइ, कउरण जम्म सरिसउ जुडइ ?
बालावत वड दळ विकळ कउरण आरिण अठि ऊहडइ ?

---

२१ पाल्हो चढ्यो सत्यो गज मार सत्ये माखरया b पाल्हणसी चढ्यौ ही गज मार पाखरया od । पाखरया था पु थेट पाड्या od पाखरया ठेल के पाड्या b । एक मारया एक मोड्या od, × b । आणि फिर अड़्या किमाड ऊभेल्या od वालिया अड़्या नवार उवहन्या b ।

२४ पाल्हणसी कै पर्ब कुण जिम जामता वारै od कवरण वचन मेलीजे कवरा सिर वीग सहारे od आवर कै आवीजे भाम कउल कुण मारो od उपट कुण पावई कवरा जल सेल्या वाली od एसरी वात कुण आगमे कुण जमराज सरिसो जुड़ै od बालावत अड़वम् विकल कुले मरणी मदि मोवई od ।
पाल्हइ कुण पावई b मेल्हई b अवनी पूठ कुरा विन पनासी (b मे अधिक) अंतनी b भासई b कुरा सरिसउ b बलमायत मारंस अवल नमरा मणी मुड़ मोड़० b ।

२५ वात

पाल्हणसी मीसरभउ निरवसउ नीसारिए वाव बसनउ।
पाखिसी विता मामी मागिसी चित मागी।

२६ मडा दूहा

वीतवियउ चहुवाणि अउहर की मांडउ जुगति ।
हथ हुइस्या हर–पुर दिसा वेग वगि विहाणि ॥ १ ॥
दिसि माजूणउ दीह मूझ सराउ सोची मुणइ ।
सुणिसी हू गरसी सदा सुणिसी मोकळसीह ॥ २ ॥
राउळ गइपउ राउ चढि वीरजी वखाणिसी ।
मइ कीधउ तेहवउ मरण जपइ भोजा–आउ ॥ ३ ॥

---

२५ वसनमा b। पाल्हो b। मीसरभो b मीसमृपा od। निरवसृपा od निरमम् b। नीसाए od। वसृपो b वसृपा od। पाखनी b। मागनी विता मामी b। मागिनी चित मामी पाखिनी चित मावी od।
(b) मे वात २५ के बाद मे दूहा न १२ है तथा उसके बाद यह दूहा है–
सव ही पार व ख्वरो सीर हुवा सग पाम ।
भार व मोजांणी मयी पांखी पुर्यागु मजाम ॥

२६–१ दूहा व देवा od वडा दूहा b।
वीतवीयो चहुमाणि od। अमहर की b जिमहर की od। मारै b मारो od। जुगत b जुगति od। हथि होस्यै हरिपुर दिसा वेगावेगि b o d। वखाणि od वीमारा b।

२६–२ देस्नि माजूणो od। दहो od। मगै od। मरण b। सुणिस्यै od। सुणिस्यै od। सुणसी मोकसी नहीं सुणसी डुगरसीह b।
od मे यह दूहा और दूहा न ४ दूहा नं १ के बाद मे है।

हाडा खीची हेक सोळिकी सूरिज-वसी ।
गुणिस्यइ ग्रित माहरउ सदा ग्रमरे राइ ग्रनेक ॥ ४ ॥
सग भाइ स-जगीस कहि-कहि ग्रचळ सर कहइ ।
मइ पहु मूझ वखाणिस्य सुणिया वस छतीस ॥ ५ ॥
पहु बेख्या परधारि परि जउहर परिजाळतउ ।
घाल्यउ ग्रघग्नेसर चढे विरतउ घर-घर-बारि ॥ ६ ॥
राउ रणथम सणाह जउहर ग्रउहर जेहवा ।
कीधा मामा-कइ कमरि वधता बीस गुणाह ॥ ७ ॥
सद खग खीचो खाडि नमणो लग लागी नही ।
उतिम मध्यम नेकठा कीधा जउहर काढि ॥ ८ ॥

२६-१ उत्तम मैंपो पाव od । वखाणसी od । मैं मीचे सेयहो मरण od हैं मीचो तीसको मरण b । कपिसी od गर्प od । मोग्रमत od । बाव od ।

२६-४ संतम भी od । मूठ सोमलसी माहरो od । इम उपहर ग्रनेक cd ।
(b) मे यह दूहा नहीं है (od) मे यह दूहा दूहा नं ९ के बाद मे है जो दूहा नं १ के बाद है ।

२६-५ कहि भाई od मयो सवजोत b । नहीं od कथन b । वखाणसी od । सुणिसै od । सुणिया b । छतीस od ।

२६-६ परिवीटीयो b सममहर परजाळता b घाले b वीर तो ।
od मे यह दूहा नहीं है ।

२६-७ उपरा थंभ b । मोमा-रइ b ।
od मे यह दूहा नहीं है ।

व्यामोहे॥वर वीर घर-भर सत देखे घणाउ ।
मायउ राद्दहर भाप रइ ससहरि मथळ स–धीर ॥ ६ ॥
मोटइ सत महि माहि मथळेसर मायइ हुवइ ।
सींधणा हरि हुइ सांकुली वहुवां ति करि विवाहि ॥१०॥
येळा तिणि व सु हागि मकहडसी घू वा पसइ ।
तणें मतेषर ऊठिसी मग्गहु भाणइ भागि ॥११॥
मापण सुवर मवीत माहे माहे मल्हपती ।
कुळ-वहुवां दीसै, कपळ ऊगां फिरि मादीत ॥१२॥

२१–८ ते सप b तू कउ od । मम नाखिस नावै नही b नाखिस ही नामी नही od । पैकथा a पैकय b । मीया समहर od । इसके मागे b मे यह दूहा है—

सूरा गुर सक सेम परि समहर परमाळपा ।
मथळे सुर गह भाप-रो समीपो सीसा नेम ॥

२१–६ विमोहपो od वा मोहे b । पत वैर्व od पत वैवे b । मायो रावहर मापरे od माने राव मापरे b । समहर od सामही b ।

२१ १ मोगे सत od । महि माप b । मावी मथळ सुर मवै b मावै मथळे सुर हुवै od । सामणइहर वीसै सवण b सीषण पर वी मापुरी od । वहुमां फिरि वीमाइ od फिर वीमाइ b ।

२१ ११ वला ते वीन माम b । पूपा b । मतेमर b । तइ मप हुता माप b >मप्पहु इ ।
यह दूहा od में नहीं है ।

२१ १२ मारप नु वर मवीन b । मांहोमांहे माम्हपुता b । ऊगा b
यह दूहा od में नहीं है ।

ते थासी तिणि ठाइ भाइसि भचळसर सणइ ।
ससि-वयणी सिव सिव करइ, पइसइ पावक माइ ॥१३॥
छूटि न जाई छेहि माहे जउहर मेल्ह स
माइ भाइ पडइ उतावळी पटराणी भागेहि ॥१४॥
जउहर महि जळिमाइ इसइ सेज पइसइ भनळ ।
पहिला-थी रहि पाछिली पग भणि पइलइ नाह ॥१५॥
मुक्मत से सजगीस भनइ सु भर भकासमी ।
तपिमउ भचळेसर तणउ भउ जउहर जगदीस ॥१६॥
जउहर भामरण हारि भनइ पळइ ताइ उतरइ ।
हरि हरि हरि–हरि हाइ रह्यउ
विसन विमन तिणि वारि ॥१७॥

२१.१३ यह दूहा bcd में नहीं है।

२१.१४ भमर मा नजी b। मारी भेप उतावली b। पागेइ b।
यह दूहा cd में नहीं है।

२१.१५ जौहरा मंझि b जमहर मंझि cd। जलवाइ cd। इसै चौड़ पैसे cd। रह पाछली cd। पैक पहले cd पग ही पहले b।

२१.१६ थे a > ते। दसै cd। धपाऱ्या cd। पोतीसो cd। तणो cd। जमहर वई जगदीप cd।
यह दूहा b में नहीं है।

२१.१७ जम्हर आभरणहार cd। हेम जाणे उतारें cd। हर परी cd। विसन विसन तिण वार cd।
यह दूहा b में नहीं है।

पुहवि न पारावार गढ अनियै गांवां तणा ।
सुर तेंतीसइ सम धरणि दरियर देसणहार ॥१८॥
सींधणहरे छद्योहि आमोलिक घर आपणउ ।
जगहरि भाघउ आळिपउ सहयउ भाघउ लोहि ॥१६॥
पेख्या तिणि परि जाइ रायगणि राणा तणइ ।
उतिम सोही आप रइ सू चइ सीसी राइ ॥२०॥
विढता वीर तिं थाट चाल्या राइ चाली हुवइ ।
कहइ सू धइ कहइ खिलसता सोह्या लोह मराट ॥२१॥
घण दळ धरां घणांह सर जलियउ संभरि-धणी ।
वेख्यउ अचळेसर विढे भायां भामीजाह ॥२२॥

२१-१८ यह छंद bod मे नहीं है।

२१-१६ सापणहरे छोह b सींधणहर सिंह छोहि od। अमोलक घर आपरो od। जगहर भाघो आलीमो od। जहरि भाघो लोह od स हीमो भाघी लोह b।

२१-२ यह पेखे परि जाय od। राणी तणे od। उत्तम a उतिम od। आपरै od। सू चे पूगो d राव od।
यह छंद b मे नहीं है।

२१-२१ वढिता b विढती od। त bod। चालीया राय चलीयै हुवै b चालि हुवी परि चालीयो od। कै पूगे कै खलसता b कइ कहतो कहे खिलहतो od। लोहे लोह bod।

२१-२१ घण b > घर्दा। घणा मगुर घण थाह od। जाल्या od जाले b। संभर od संमर b। विढतै od चढीयो b। विढै od बीठइ b। भायां od भाई b। भामीजाह bod।

माया मेक-मगाह गढ हुता गढ तळहटी ।
घत मोही सींभणहुरा गोबा लग गळताह ॥२३॥
हुइ-मह मपणाह हाथि पाडे कवर पचाहुरइ ।
मांत्रावळि माम्न्तउ मेळउ हुइ मारामि ॥२४॥
धीरउ वहुती धारि पड़तइ फवर पिटाळिजइ ।
मामष सगळे माप रा माहुया मीर ति वारि ॥२५॥
घणा मसुर घण घाइ पाडे मचळ सर पडचउ ।
मापण वुरग न मप्पियउ जीवत माइल राइ ॥२६॥
मनि पहि जिम गढ ऊठि ऊजड करि माप्पउ मही ।
सइ गारी राउ गागुरण पड़मा मोजवस पूठि ॥२७॥

---

२१ २३ मक ममाह od । हुता od । मुन माही od छण्णा ही b ।
सामणहप b । बोरा od ।

२१ २४ है में पान रै हाथ o । पाडै o । बमन o । पचाहुरी b पैठाविमा
o । मत्रावमि o । माम्न्तो o । मेलो हुवै मारम o ।
गैमार मर हैपर पुड़ै हुवै मना मारम b ।
यह दूहा d में नहीं है । o में भी हाशिये में दिया हुआ है ।

२१ २५ धीर टबै प्रति बार b धीरट बहती धार od । पाडै पुवर पैठालमा
b पाने पु वर पेठालिमो od । मातप od । मिली od ।
वाहीया od । बारोबार b बीरम बार od ।

२१ २६ घणे od > पम्पड़ । घाम रो od । बारीसो od । जीवती od ।
धीरती करै पि धार जेण जेण मुहड़ मूजमा ।
मोहीयो वळ सुरतांण रै गुड़मो जायल राव ॥ b

२१ २७ मन यह वैरी पूठि od । करे म मारीसो od । मै पोरी राव
बागरिण od । बीमारन od ।

२७ कवित्त

सातल सीम हमीर कन्ह जिम जगहर जाळिम ।
चविय वेवि चहुवाण आदि कुळ-वट्ट उजाळिम ॥
मुगुत चिहुर सिरि मंडि बप्पि कठ तुळसी वासी ।
भोजाउत भुज-वळहि करहि करिमर काळासी ॥
गड साथि पड़ती गागुरण दिढ वासे सुरताण वळ ।
ससारि नांव भासम सरगि अचळ वेवि कीधा अचळ ॥

---

२७. शान्ह bod । जगहर जिम काती od । वाती b । सिरे छिव चहुआंण od । वट उजाल्यं od । मुगट b मुक्त od । मंडीया od > सिरि मंडि । बपु कठ तुलछी b बप कंठ तुलछी od । वासे bod । भोजावत od । करहि od । भोज तणी भुज बला b । करहि od कीया b । कालासे od । कीड b वाड od । पडती b । गागरिण od । रावणि od । संसार नाम od । सरगि od । वार्ता अविनासात वासम समरत b । वेव किया od । अचड कीन्हे कीघी b ।

कवित्त २७ के बाद b में यह कवित्त अधिक है—

सिघै सहस श्री वळे पड़सी सहस मुगलाहि रिम्म ।
बीस सहस गै गुड बाहे हैमर क्षेत्रै किण ॥
भोज तणै भुज-बळा असुर दह-वट्टे कीया ।
अचळदास गागुरण कोट मायै-सू दीया ॥
परमाण बांधि रायण मथी पासहणसी भीसारियो ।
चाहुवाण राय सांभर-धणी सम-पुर अचल पधारियो ॥

इति श्री अचलदास खीची री वचनिका सिवदास चारण-री कही संपूर्ण । शुभं भवतु । श्रीरस्तुकल्याणमस्तु । ० इति वचनिका संपूर्ण d ।

परिशिष्ट

अथ लाली मेवाड़ी री वात लिख्यते

प्रथम अचळदास खीची गढ़ गागुरन को धणी। गढ़ गागुरन राज्य करै छै। तिणरै राणी लाला मेवाड़ी। दस सहस मेवाड़रो धणी रांणो मोकलसी तिणरी बेटी। निरादरियो पुरस राज भगळोदी लाला रै राज।

इतरी बात करतां खींवसी सांखलो आंगळ राज करै छै। तिणरी बेटी उमा सांखुली मारवणी रो अवतार। परसां ततारी। तिण खींवसी जी रै बारणा पीठ, तिणरी बहिन मीरां चारणी तिका आगळ थी गढ़ गागुरन[1] गई तरै अचळदासजी मीरां नै पूछियो जो मारवाड़ मांहि कोई नावरो हुवै तो म्हांनै बतावो। तरै मीरां कहियो जा उमां सांखुली खींवसीजी री बेटी तिका राज सारीखी छै[2]। तरै अचळदासजी कहियो-उमां किसड़ी एक छै? तरै मीरां कहियो[3]।

असमान ऊपरी इंद्री अपछरा, सरोवर रा हंस, सरद को कमळ, बसंत की मंजरी भादवा की बादळी बादळ का बीज

---

१ मांगली करणनै गई। २ लायकी जोड़ी री।

३ दोहा— चंद वदन मृगलोयणी जिहं वदि गजगत।
पूरबी उमा सांखली मन हरणो हक चित ॥१॥
कमळ अलीसै कीमती बाला जोबन बान।
ईंदरांणी मीहं ममपत पूरबी रंभ समान ॥२॥

मेह को ममोलो वावनो चंदण सोळमो सोनो रायवेळ को प्रभ ईम को बच्चो । लक्ष्मी को अवतार, प्रभात को सूर पूनिम को चांद सरद को किया सनेह की लहर गुणको प्रवाह, रूप को निधांन गुणवंत की वास [१] जोबन को पसरयो इसी उमां सांभळी छै । तिका तिरा राजवी घणा पुन्य किया होसी भर परमेसर मजियो हुसी तिको पावसी ।

इवरै मीमी कहियो जो राजरो परधांन मेल्हो म्हु व्याह आपनै मेल्हसां । तरै अचळदासजी मीमी नू विदा कीनी । आपरो प्रधांन साथ मेल्हियो नै घोड़ा ४ हाथी १ देइ नै विदा कीन्ही । दिन १५ मांहि वांगळ पहुती । रुठै मीमी रो भाई कीठू तिणनू मीमी कहियो-जो अचळदासजी थानूं मुजार कहियो छै । मै भे ठाकुर प्रधांन मेल्हिया छै वाई उमांनू मांगण सारू । ये खीवसीजी नू गुदराबजो मै प्रधांन पावे लगावो । तरै कीठू प्रधान नै लेनै दरबार गयो । खीवसी जी मांहि तेडनै पगे लागयो । पछो मोंण मनुत देनै समाचार पूछिया । पूछ भर पछै डेरो दिरायो । पछी मगत करनै जीमाड़िया । पछै आपणरै महल पधारियो । तरै खीवसीजी प्रधांन मुहता राजलोक आपरा हुता तिकांनै पूछाड़ियो । मै उमांरो नाळेर दियो[२] । तरै प्रधांन सहनै गढ़ गागुरण आयो । परे आइने अचळदासजीनै वधाई दीन्ही जो वीवाह थापिमै आया छां । राज हिमैं आसाम री तवड करो जान करेनै परणीजण पधारो ।

---

१ पूहरी पसराई ।
२ विवाह लगन थापनी कीन दीवी घने इमो कांम मोटी करनै पधारजो ।

तरै अचळदासजी सांखांनै कह्यियो- 'म्हु म्हैं मारवाड़ मांहि नातरो कियो है । ये कहो तो म्हे परखीजण आवां ।' तरै सांख मेघाजी बोली । 'थां सांनो नातरो क्यों कियो ।" तरै अचळदासजी कहियो- 'जो हुई सो तो पार पड़ी । हिमैं थूंथो देवो नु परखीज आवां । तरै सांख मेघाजी कहियो- 'म्हु हेक बातरी थांह देवो अमु थांनै हुक्म द्यां ।" तरै अचळदासजी कहिया-"जो ये कहो तिका बात थांह द्यां ।' तरै सांखांजी कह्यो-"जो ये ओमरूणो सनै अठै पधारो तठा पछै म्हांहरै बिना हुक्म सांसुळी रे परै पधारणा पावो नहीं । तिका बात री थांह म्हांन् देवो ।" तरै सांखांजी नू थांह दीन्ही ।

देनै पछै घणो साथ लेनै फोज सिणगारीनै रजपूत सिणगारी नै केसर गुलाव सूवा मांहि गरकाव हुयनै सांन करेनै चाढ़िया । पछै चालेनै दिन १० मांहि गांगळ थी कोस १ आइनै मोहर पधारदार मेल्हियो । तरै खीवमीजी कुंवर साथ सनै फोज करेनै पधारिया । साम्हां चढेनै पधारिया । हठामी सिणगार करनै सांन आवी । हठावी सांमुहा पणि साम्हेलो करेनै पधारिया । बहु साथ मेळो हुईनै माहो मांहि मिळिया । मिळी नै गांगळ नू लड़िया सो किसा विराजमान हुवा है । गांये ईडजी पटा करिनै धरती ऊपर पधारिया छै । इण शुगत सौं शांन पधारिया छै । गांगळ रा लोक ऊंचा चढ चढ न आवे छै । राजलोक पिण गोखां चढि चढि नै जावै छै । इण जुगत करिनै डेरियां बंदावो छै । चांदनी आंनीवासे पधारिया । पछै गोपूळक वेळा हुइ तरै

आप माँहे पधारिया । बीजा सामने डेरा दिराया । पछे चवरी मांहे पधारिया । पछे रूमा सांखली ने सिणगार करने चोरी मांहे पधारिया । हथळेवो जुड़ायो छे । केहरो बांधियो । ब्राह्मण वेद भणे छे । सुहव स्त्री मंगळ गावे छे । हे वे फेरा हुय रह्यो छे । इसी भांत सूं परणीजने मोहल मांहे पधारिया । पछे रूमांजी सोळे सिणगार करने वैठा छे । थाळ थाळ मोती सारने हणा कुमरजि महल पधारिया । दिन ७ महल मांहे रहिया । किस ही मुजरो ही पायो नहीं । सात दिन बाहिर पधारिया नहीं । तरे दरगस बांधिने उमरावां मुजरो कियो । पछे आपरो परधान हुवो तियसूं कहियो— 'एक तो सबळो सोच हुवो । तरे प्रधान बोलिया—को कासूं सोच हुवो । "ओ खास मेवाडीनें बाढ दीनी मांहरे बिना हुकम सांखली रे घरे नहीं आवां । सांखली इमकी खिसकी घड़ी एक दूर न कीजे । पास हीज राखीजे ।'[1] इसकी रीमनि हुवा । अने आबांजी नै बाढ दीनी सो सोच घणो हुवे । तरे प्रधान सीं इतरो कह्यो जु सीख करो । अठे क्यों रहो । ये वैस जावो । आप कह्यो जु म्हेतो मास ७ रहिस्यां । सीप नहीं करां । इतरो कहिने मपळजी मुजरे पधारिया । तरे परधान सो सीप कर मेलिद्यो । प्रधान गढ गागुरण आयो । आबांजी मांहरो ठाकुर हुवो सो अठे नहीं छे । घरे आवस नहीं करे छे । सांखली सूं रंगमांण हुआ छे । मे कागळ लिपने इलायजो । ठाकुर आंयो छे । घरे आवसां तो आबांजी रे सारे हुसां । लिख घडी भली

---

१ इसकी पाठमण दै ।

तिका भरे रहां छां। सोस किया छे ठाकुर मू आयो छे। ये विचारने कागळ मेलड्या। तरे लालाजी नां कासीद साथ कागळ त्रिया प्रधान रो लिखियो। समाचार सांभळिया। तद पगारी मळ माथै भ्नी। तरै वळवटा भावया लागा "जो कासौं कीजे। तरै लालाजी विचारने कागळ मेलियो। 'राज [१] पांखी अपीवत भने पधारजो नहीं तो लाशां मूई जांणजो।' बीमो राज सौं मान पूज कोई नहीं। पिण आपरा जीव तो आप सारू छे। सो सही जांणजो। सो कागळ लिखिने मेलियो। कासीद कागळ आपने भचळदासजी रा प्रधान नै कागळ दियो। जो कागळ ठाकुरां नै गुदरावजा। तरै प्रधान कागळ करो लियो। भने दरबार आयो। मुजरा करै सो कागळ गुदरावै सु तो मुजरो पावै नहीं। लालसीजी री छोकरी सांपै कागळ मेलियो। तू जायने ठाकुरांनू कागळ गुदराय तरै छोकरी कागळ करो लियो भने चालियो पाधने धमाजी नै देमाळियो। तरै धमाजी पाधने परो नांखियो। ठाकुरां लग पहुतो ही नहीं। तरै परधान रीसायने पाछो डेरै आयो नै कासीद नू कही—"जा लालाजी नू जायने कह— 'थांहरो कागळ भठै कोई भारमां ही न देखवो। ठाकुर हंता सो नहीं। तरै लालाजी नू रीस आई तरै लालां उठी ने बाहिर आई। आयने मुहतो तेडियो— 'जा भारोगी करो क्यों लालां मळै। तरै मुहतो कहे—"धमा कीजे। बोलो सो करू ?" तरै लालां कहियो— जो प सुपयट करें जांणजो थें वेगा हुवो लालां कहियो सो

---

१ पे ठाकुर थे उठे जीमता हुता तो भल् मई खायने मरजो।

सही।" इतरो कहनैं ऊठैने हाली। तरै मुहतो आडो फिरियो—'जो राज क्रमा रहो। जो मुहता मु बांगळ आया देखौ।" तरै मुहतैं आयेनैं हाथ पकडेनैं सासांजी मू लेडेनै मांहि गयो। ले जायनै सासांजी नै कह्यो— अचळजी मू लेडे नै आलू तो गुलाम जायेलो। हमै निश्चिन्त रहो। मुहतो ठाकुरां मैं ले आपमी सही सांणसो। इतरो कहीनै मुहतो आम चढियो। बांगळ नै सझिया। साइनैं बांगळ पुहतो। उठै जाइनै पहिलो प्रभात सौं सिविको। सिवनैं पछै ठाकुरांनै मालुम कियो। तरै ठाकुरां मोहता नू मांहि तेडियो। तेडनै पूछियो। 'जो तू अठै क्यों आयो छै।" तरै मोहतैं कहियो। 'जो राज मैं अठै आयां सात मास हुवा बैसेने रहिया सो बुरों कियो। अठै घरती सगळी मूसीबां सूनी कीधी। राज अठै क्यों बैसे रहिया। चिहु पासै मोमीयां हाथ उपाडिया छै। घरती मांहि सोसाखू ही हुय रही छै। बुरो हवाल छै। जिको राजवियां नू घरती री आस हुमैं सो अठै पारकी घरती मांहि बैसेने क्यों रहै। राज मू सगळी चूक पड़ी। हिमैं पांणी अपीव घरे पधारो। राजवी होय सो पारके घरे परदेस आय क्यों रहे? बुरो कियो। हिमै राज बेगा पधारो। मुहतो अचळदासजी सो गाडो विडीयो। तरै अचळदासजी सीवसीजी नू कहाडियो 'जो हर्ताखो कराडो। तरै राजा सीवसीजी हलायें री तेवड करण लागा। पाव डाकलो हाथी मोड़ा सहु त्यार किया। तरै सीवसी रै राजलोक मांहि खबर हुई— 'जो अचळदासजी आस मेवाड़ी री बांह देई नै आया छै त्यु यां रै बण मुक्मे सांखळी रै घरै नहीं आई।" तरै सीवसीजी

नू आ चिंता हुई। तरै सीवसीजी नू राजलोक कहियो। जो अचळदासजी सारा मेवाड़ी रै बस छै। राज सगळो ही थारां रै हाथ बस छै। सासको निपट सबळो छै ने बाई ऊमां मोठी छै। थारण मीमी साथै मेल्हो हैसू धीरज हुवै। तरै सीवसीजी पीठू नै कहियो। मास ४ मीमी नै बाई ऊमां साथ मेल्हो बाई बाढ़ी हुसी' तरै मीमी नां री बुलाइ लेसां। पछै) मास च्यार ऊमां साथ हुवै तो म्हे निर्वत हुवां। तरै पीठू कहियो 'जो मीमी म्हारी बहिन तिसड़ी राज री पहिन छै। म्हांनै कांसो पूछो। थां राजरै विचार आवै स्यूं करो।

अचळदासजी नां सीस दीनी। घणा हाथी घणा घोड़ा घणा गाजा बाजा करेनै बाई ऊमां बोळाई। मीमी थारणी साथै मेल्ही। राजा सीवसीजी साथै कोस दस बोळावा पधारिया मे पछै सीस करेनै सीवसीजी आपरै घरे आया।

ऊमां नां हुसाई तरै मारग मांहे पधारतां मास ४ लगाया। तरै मीमी मीण बजावै गावै। तायें बाई ऊमां नां भर अचळदासजी नां रीझावै। बीजो छोकरी पनरैं साथ दीमी तिका ऊमांजी रा हीड़ा करै तिसड़ी ही मीमी रा हीड़ा करै। जिसड़ी चोवोळ मांहि ऊमां बैसै तिसड़ी ही चोवोळ मांहि मीमां बैसे। इतरो मीमां रो कायदो। अचळदासजी सौं साव-साव करमो हुवै सो मीमी करै। मास च्यार मारग मांहि लगाया। मास सात ऊठै रहिया। मास ११ लागा। वारमैं मास घरे पधारिया। ओच्छवो बधावैनै महलां मांहि पधारिया।

भागे ताल मेवाड़ी वारै धाम नै तेरह चौवरा होय बैठी छै। वासांजी कहै छै। इवरा मास क्युं लागा ? ये जिका कीमी तिका कोई न करै। इवरा मास विघाळै लगम्यां।

तरै भचळदासजी कहियो—लगाया सो पार पड़िया। हिमें ये मनावो। 'थांसूं थांह दीनी छै सो पाळसां। हिमें थां साल हां। तरै वासांजी नों भचळदासजी कहियो। थने सांखुलीजी तो जुदा किया। सखरा महल करायनै दीना। मानां घरां मांहे बैठा परमेसर रो नांम लिये छै। भचळदासजी नू आंख्यां ही न देखे छै तरै इन्मांजी मीमी नू कहियो "हिमें क्यों कीजसी ? एकेक रात बरस बराबर हुई छै। थासी साथी जिका थाथी ही न पावू इसवी हुई। तरै इन्मांजी मीमां नां कहै छै थांसू कीजसू ? कोइक विचारणा करणो भो थमारो क्यों नीसरै। 'थो तू बीण बजावै तरै रन रा मृग आवै नै आगे भूमा रहवा सो तू भचळजी नू मोहै नै ल्यावै तो तू खरी गुणवराय।

तरै मीमी कहियो—"जो भचळदासजी नां एक बार आंख्यां देखूं तो जतन करां। आंख्यां ही न देखूं तो किसो आर लागै ? तरै इन्मांजी मीमी घणी चिंता मां सूती हुती। श्री जगदीश्वर (देवी) सुहणा मांहे कहियो। जो ये गायत्री रो वरत करो तु ये मन मांहे वांछो तिको होसी। तरै इन्मांजी जागीनै मीमीनै कहियो जे इसड़ो सुहणो तरै सुहणो लाधो। मीमी भर इन्मांजी गायत्री रो वरत करणो मांडियो। गायत्री नै वच बताई छै मै पूजा कीधी। पछै गाय मो गोबर करै तिको गोबर ल्यो लेनै मांहीवी वच

पीयेने तिबरी बाटी करै।। रोटी करने तिण रो पचासयो करै। असटमी रे दिन गायत्री रो वरत करता पूजा करता वरस सात हुआ तरे अष्टमी रे दिन घडी २ पाछिली रात्रि हुई तरे सरग थी कांमधेनु उतरी। उतरने ऊमांजी बैठा हुता जप करता हुता तठे कामधेनु आइ ऊमी रही।

तरे ऊमांजी दीठे तो सोना रा सींग अर सोनां रा खुर अर गायत्री ऊमी। तरे ऊमांजी उठे ने प्रदखना दीनी। डंडवत प्रणाम करेने पगां लागी।

तरे गायत्री बोली 'जो सींग माहि हार छै तिको हार उरोले। हू थांनो तुष्टमान हुई।

तरे ऊमांजी हार उरो लियो। लेने ऊमा रहिया। तरे गायत्री कहियो 'जो ए हार अमोलक छै। ए हार थी थारो भलो हुसी। इतरो कहीने गायत्री अलोप हुय गई।

तरे ऊमांजी मीमी नै अगाय मै कहियो। जो वधाई वे जो थारां सू गायत्री तुष्टमान हुई छै। कामधेनु सरग सू पधारिया हुता। मोनू अमोलक हार दियो। वेनै कहियो– 'थारो भलो हुसी। इतरो कहिनै अलोप हुय गई।

तिसवे प्रभात हुवो। तरे ऊमांजी हार पहिरियो। तरे सासांजी री डोकरी हार दीठो। देखें मै हैरान हुई। तरे डोकरी आवेने सासांजी नै कहियो। जो सांखुलीजी रै इसड़ो एक हार छै इसड़ो मात लोक माहि न दीठो। अमोलक छै। इसड़ो महणो संसार मांही नहीं।

तरे सासांजी बजारण नै मेल्ही। सुन्दै हार मांग ल्यावो जोवनै परो देसां। तरे बजारण ऊमांजी रै घरे आई। ऊमांजी घणा मांन मुहत देनै पूछियो—जो थे किसे काम पधारिया हो। तर बजारण कहियो—"थांहरै हार छै सो सासांजी जोवण नै मांगे छै। जोइनै परो देसां। सो थो तो सासांजी नै देखाडिनै आवां।" तरे ऊमांजी कहियो—"जो थे आम्ह देवो तो ले आवो।

तरे हार रकेबी मांहि घाल नै बजारण रै हाथ दियो। तरे बजारण आयनै सासांजी हाथ दियो। देख नै अचारिज होय रह्या। तरे बजारणजी नूं सासांजी थळे पाछी मेल्ही 'तूं जाय नै ऊमांजी नै भीमी मै जाय पूछ आव थे कहो तो हार पहरनै ठाकुरां सौं मुजरो करां।

तरे ऊमांजी अर भीमांजी कहियो "जो ठाकुरां सूं एक दिन[1] म्हांरै घरे पधरावो[2]" तो थानै हार बसन करणा देवां। "तरे सासांजी कहियो "जो थांहरै घरै ठाकुरां नै एक दिन मेलहसां।" तरे जोस देनै हार मांगे लियो।

तरे मंजन करैनै सोळै सिणगार किया। करैनै अचळदासजी रै मुजरे पधारिया। तरे अचळदासजी पूछियो "सु ए हार कहां सी आयो ? तरे सासांजी कहियो। "जो हार म्हांहरा पीहरा सौं आयो।" तरे अचळदासजी कहियो- 'जो मेवाड रा धणी रै घरे इसड़ा नग गहणा हुवे जीओ कठै हुवै ? घम रावो मोकमसी, जियां रै घरे इसड़ा गहणा नीपजै। पछै बातचीत करी नै पोढ़िया।

---

१ दांन। २ पधारवा रो।

प्रभात हुओ तरै सासांजी अचळदासजी नूं कहियो— 'जो रात नै आज सांखली रै घरै मेल्हां। जो एक बात री बांह मांगां छां।" तरै अचळदासजी कहियो कसी बातरी बांह मांगो छो ? तरै सासा कहियो– 'जो थे आगो ध्यारो नहीं तो दूजो देवां। आगा थकां पहुढो। बातचीत करे नै पधारो। तो रात नै सांखलीजी रै घरै मेल्हां।

तरै अचळजी बांह दीनी–"जो आगो नहीं ध्यारां। थे हुकम करो तो आज की रात उठै पोढां।" तरै सासांजी ठाकुरां नै हुकम कियो। आथण हुवो तरै ऊमांजी रै घरै अचळजी पधारिया।

आगै ऊमांजी हरसामध (अक्ष) हुवा सो आज धन्य घड़ी धन्य दिन। आज दिन भलो ऊगो सो सातां परमां सों ठाकुरां रो मुंह दीठो। आणंद वधाव हुआ। तरै ढोलियो बिछायो नै ठाकुरां नै मांहि पधारिया। भीमी आगै बैठी वीण बजावै छै नै ऊमांजी आगै हाथ जोड़नै ऊभा छै। तरै अचळदासजी ऊमांजी रो हाथ पकड़िनै ढोलियै बैसाण्या छै। ढोलियै बैसाड़नै बातचीत करण लागा। भीमी आगै बैठी वीण बजावै छै अर गावै छै। ठाकुरां नै रीझावै छै।

तिसड़ै बैठां आधी रात हुई। तो ठाकुर आगो ध्यारै नहीं। कटारी छोड़ै नहीं। तरै भीमी कहियो— 'जो राज हथियार छोड़ैनै पोढो। तरै ठाकुर कटारी आपै दीन पोढिया। तरै ऊमांजी दीवड़ी[1] देण लागा। तरै भीमी जांणियो आ ठाकुरां रो

---

१ बत्ती।

कटारी खोसण रो मतो नहीं। तरै झीमी राग असावरी करनै मावन गावणी मांडी।

मावन रा दूहा

ऊमादे रांणी अचळजी सौं रूसणो जो मिस लीयै रे मनमथ।
सात बरस के बीछुड़े क्यो करि   निबाह[1] ॥१॥ ऊमां ॥
जेहवो मनहर बाटकी तेहवो ही पिव होय।
हार करी हींडोळवी पोइ भय तीजो सोइ ॥२॥ ऊमां ॥
चंपक केरो डोलियो कसतूरियो अवास।
भय आगी पिव पोढियो[2] बाळ को परवास[3] ॥३॥ ऊमां ॥
पाट पटंबर ओढणै आई सीस गुथाइ।
अचळ अवाची सिव भ्रू सार न पूछी काइ ॥४॥ ऊमां ॥
ओढण आवी बीटणी, तन बीटियो अर्पाण।
ना भय अचळै जागणी ना भय मूक्यो मोख ॥५॥ ऊमां ॥
हार दियो बांदी बम्बो मेरूहे मोण मरभ्म।
ऊमादे पेम न बकिसयो आयो सेज करम्म ॥६॥ ऊमां ॥
फिरती मायै झूळ गई हिरणी मरोसा साय।
हार घटै मिस भांथियो हसै न सांमहो भाय ॥७॥ ऊमां ॥
पम दिहाड़ो पम पड़ी नहीं आंवयो बो भाव।
हार गयो पिव छूप रह्यो कोप न सरियो काज ॥८॥ ऊमां ॥
निस सहि गई पुकारती कोइ न पूछ्यो बात।
रायपण बिळखती रही हो ही न पेरयो राम ॥९॥ ऊमां ॥

---

१ तो भ्रु रैण निबाह। २ सुई रयो। ३ जो गाम रहे परवास।

सटै सियो । सो हार परसि म्हांरो गयो मैं थे पिया गया। पर म्हारो मन पण कोई सरियो नहीं। तरै मचळकी मू बसर हुई। तरै मचळकी कह्यो- 'म्हांनू सासां हार सटै वेचिया पर हार पयो किसो ?" तरै सीमी कहियो—हां राज हार सटै वेचिया है। तरै मचळकी कहै-

दूहो

पींपळ पांन पछकियो वाया सीतळ वाव ।
सेज बिछावो सांवळी रमसी वीची राव ॥१३॥

वात

तरै मचळकी रीसायनै कहियो को— 'तू पहली म्हारी वरही है क्यां वाला ? भरे वावण रो सौस पासां । तरै ऊमांजी कहियो—"ओ मा राज ! राज री वांह वाय सू स मा पाछो। राज म्हांसु मयसंत हुमा को तो म्हांनै हेक बातरी बांह मचळकी म्हांनू देमै पधारो। तरै मचळकी कह्यो—"जो स्हां। किसकी बातरी बांह मांगो छो ? तिका वानू देस्यां।' तरै ऊमांजी कहियो— 'जो म्हांरी छोकरी राज मै तंडम आमै तरै थे पूछ वरा पधारैमै गिलजो। ते वात री बांह देमै पधारो।' तरै मचळकी बांह देनै वालांजी घरै पधारिया।

इतरी वात करतां दिन आठ हुआ। तिसड़े पण दिन मचळकी गै सासांजी मोहल मांहि बैठा है। सोगठै रमता हुवा। रमत माथी हेक हुई रांमत रस आई तिसै ऊमांजी छोकरी मेल्ही—

"जो थाइमे भाखळजी नूं सताब बटाय ल्याव।" तरै कोकरी आपने कह्यो- 'राम नूं सांसुसी पधरामै छै। तरै भाखळजी उठण लागा। तरै सासांजी चाळ पकड़मे कह्यो— 'जो म्हांरी रामति पूरी करेने पधारो। तरै भाखळदासजी कह्यो-"जो पूरी क्यों करां। जो थांह दने भाया हुवा। थे म्हांने वधिया तरै न आंणियो? इतरो कहिनै भूठिया। पछो आईटियो। आंवटिमै पधारिया। इतरै सासांजी नूं रीस आई। रीसायमे कह्यो—"जो थांसू परवासो करां तो तोयो मोक्ससी सूं करूं।" इसको सोंस घातियो।

भाखळजी ऊमांजी रे मोहल पधारिया। खुस हुवो। पछे ऊमांजी मे भाखळदासजी मरणजीव तळ पधै संतोस नरनहोजी।

दूहा

चवरी रे दुहागड़ै नीठ स वधियो नेह।
गढ गागरण मै अगोळ, सोई कियो सनेह ॥१४॥
भासा राग पसावियो, मीमां बंधो आंख।
मन भावणो पीहको मोमीजियो महरांण ॥१५॥
थाही परमळ वासिया सिंहू दिस मगटी वास।
ऊमादे मागो भाखळजी सूं रूसणो पूगी मन री आस ॥१६॥

बात

ऊमांजी मीमी रो वांछियो हुवो। गाममी हुस्टमोन हुई।
जिसकी ऊमांजी मीमी सूं रूठी जिसकी गायनी रो बरत करे तिणनूं रूठसी।

पछे सास्वां मेवाड़ी रो रूसणो गीतां गायो छै सो सह कोई जांणे । अस् लिखां ?

पछे अचळदासजी ऊपर पातसाह री फोज आई । पछे अचळदासजी चाळीस सहस स्यूं तेरह जौहर कियो । अचळदासजी कांम आया तरै लालांजी ऊमांदेजी पेही साथ सती हुई । तरै लालांजी रो रोसणो भागो ।

इति श्रीची अचळदासजी लालांजी ऊमादेजी री बात संपूरण ॥१ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ सं० १७४६ असाड़ कृष्ण दशम्यां ॥

१ इति बात मेवाड़ीनी बात पूरी हुई सही ॥ संवत १७६७ पौस वदी ८ सोमे । नूणवाड़ा मध्ये । लिखतं पंड्या पूना । उदैपुर मध्ये राजश्री अमरसिंघजी वार्चे लिखत ॥ श्री ॥ श्री ॥

—•••—

लाली मेवाड़ी की बात

[अनु० बदरीप्रसाद साकरिया]

गागुरनगढ़ का स्वामी अचलदास खीची गागुरनगढ़ में राज्य करता है। इस सहस जागीर के मेवाड़ के स्वामी राना मोकलसी की पुत्री लालां मेवाड़ी अचलदास खीची की रानी है। अचलदास दाढ़ी-मूंछ रहित और स्त्रैण होने से राज्य की समस्त व्यवस्था लालां के हाथ में है।

इधर जांगलू में जीवसी सांखला राज्य करता है। उसकी लड़की उमां सांखली तेरह वर्ष की आयु की ऐसी रूपवान मानो साक्षात् पारवती का ही अवतार हो। उन्हीं दिनों जीवसी का एक चारण भीठू जिसकी बहिन भीमां जांगलू से गागरूनगढ़ गई हुई थी तब अचलदास ने भीमां से पूछा कि मारवाड़ में कोई संबंध योग्य लड़की हो तो मुझे बताओ। भीमां ने कहा— जीवसी सांखला की बेटी उमां सांखली आपके योग्य है। तब अचलदासजी ने कहा-उमां कैसी है? भीमा ने उत्तर दिया— 'आसमान से उतरी हुई इन्द्र की अप्सरा मानसरोवर का हंस शरद का कमल वसंत की मंजरी भादों की बदली आषाढ़ की बिजली वर्षा की बीरबहूटी बावना चन्दन सोलहवां (शुद्ध) सोना रायकपूरी का गर्भ राजहंस का बच्चा लक्ष्मी का अवतार प्रभात का सूर्य पूर्णिमा का चंद्र शरद की छटा (?), स्नेह

की लहर गुण का प्रवाह, रूप का भण्डार गुणवानों में श्रेष्ठ, दरानीय यौवन—ऐसी उमा सांखली है।[1]

जिसने बहुत पुण्य किया होगा और परमेश्वर को भजा होगा वही राजवी (राजा) इसको प्राप्त कर सकेगा।

मीर्मा ने पुन कहा—यदि आप अपना प्रधान भज दें तो विवाह-संबंध निश्चित करके भेजेंगे।

तब अखतदासजी ने मीर्मा के साथ अपना प्रधान चार घोड़े और एक हाथी देकर उसको विदा की। पन्द्रह दिनों में मीर्मा जांगल आ पहुँची।

वहां पर मीर्मा ने अपने भाई बीठू को कहा—अखतदासजी ने आपको जुहार कहलवाया है और उन्होंने बाई उमा की मंगनी के लिये अपना प्रधान भेजा है। आप सींवसीजी को निवेदन करें और प्रधान को अपने साथ में ले जाकर उनके पांव लगवावें।

तब बाठू प्रधान को अपने साथ लेकर दरबार गया। सींवसीजी ने प्रधान को अन्दर बुलाकर पांव लगवाया और

---

१ मुख चन्द्रमा के समान नैन हरिण के समान, कटि सिंह के समान गति हाथी के समान वर्ण स्वर्ण के समान और जो बत्तीस लक्षणों से शोभायमान है। रंभा के समान ऐसी अप्सरा तो इन्द्र के यहां भी नहीं है। एक चित्त से ध्यान करने वाले योगियों के मन को हरण करने वाली—ऐसी वह गुण युक्त उमा सांखली है।

बहुत मान-सम्मान देकर कुशल समाचार पूछे। फिर डेरा दिया और अनेक भांति तैयारी करके भोजन करवाया।

संध्या समय अन्तःपुर में भी (प्रधान के आने की) सूचना कर दी गई। तब जीवसीजी ने अपने प्रधान मोहर्तों और अन्तःपुर से परामर्श करके झालां के संबंध का नारियल लिया। विवाह-लग्न स्थापित करके प्रधान को विदा दी और कहा बड़ी बरात करके पधारना।

प्रधान वहां से रवाना होकर गागरूनगढ आ गया। घर पर आकर अचलदासजी को बधाई दी और कहा—विवाह पक्का करके आया हूं। आप अब बरात बना कर विवाह करने को चलने की तैयारी करें।

तब अचलदासजी ने लालां को कहलवाया कि—'हमने मारवाड़ में संबंध किया है, तुम कहो तो विवाह करने को जायें।'

तब लालां मेवाड़ी गुस्से हुई और कहा कि—"तुमने गुप्त रूप से क्यों संबंध किया ?

तब अचलदासजी ने कहा—जो हुआ सो तो हो गया। अब आज्ञा दे देओ तो विवाह करके आ जाऊं। तब लालां मेवाड़ी ने कहा कि यदि आप एक बात का वचन दें तो आप को आज्ञा दूं। तब अचलदास ने कहा—'तुम कहो उस बात के लिये वचन दे दूं। तब लालां ने कहा 'जब आप नई बहू लेकर यहां पधारो तब मेरी आज्ञा के बिना सांखली के रनिवास

में नहीं आ सकेंगे—इस बात का वचन मुझे दीजिये । तब सासों को वचन दे दिया ।

वचन देने के बाद बहुत साथ इकट्ठा करके सेना और राजपूतों को शृंगारित करके और उन्हें केशर गुलाब और सौंधा आदि से गरकाब करके बरात बना कर रवाना हुए। इस दिन चल कर आगरा पहुँचने में जब एक कोश शेष रह गया तो पहले बधाईदार को आगे भेजा । तब कीकसीजी अपने कुंवर और सेना को साथ लेकर अगवानी करने को पधारे ।

वहाँ से तब शृंगार आदि करके बरात आई । सांखलों ने सम्हेला किया। दोनों ओर के परस्पर मिले और मिल करके आंगन की ओर प्रस्थान किया। अचलदासजी सवारी पर विराजे हुए कैसे शोभायमान हो रहे हैं मानों इन्द्र पधार करके धरती पर आये हैं। इस ठाट बाट से बारात बनाकर पधारे हैं। आंगन के लोग अटारियों और घरों पर चढ़-चढ़ कर बरात को देख रहे हैं। इस ठाट-बाट से अचलदासजी ने आकर तोरन को वन्दन किया । तोरन-वंदन के बाद जानीवासे गये। गोधूलि समय हुआ तब अचलदासजी अन्दर पधार कर चंवरी में पधारे। दूसरे साथ वालों को अलग अलग डेरे दिलवा दिये ।

फिर उमां सांखली भी शृंगार करके चंवरी में पधारी । गठबंधन होकर पाणिग्रहण हुआ । ब्राह्मण वेद पढ़ रहे हैं । सौभाग्यवती स्त्रियां मंगलगान कर रही हैं और जयजयकार हो रहा है।

इस प्रकार विवाह करके अचलदासजी महल में पधारे। इधर उमाजी भी सोलह शृंगार करके बारह मास में मोती संवार कर और बड़े ठाट से महल में पधारी।

अचलदासजी सात दिन महल में रहे। बाहिर पधारे ही नहीं और न ही किसी का मुजरा ही स्वीकार किया।

तब उमरावों ने तरकस बांध कर (शान की तैयारी करके) मुजरा किया। उस समय अचलदासजी न अपने प्रधान को कहा "एक बड़ी भारी चिन्ता की बात हो गई। तब प्रधान ने कहा—"कौन सा फिकर हो गया ?"

अचलदासजी ने कहा—"लालां मेवाड़ी को वचन दिया था कि तुम्हारी आज्ञा के बिना सांखली के रनिवास में नहीं जाऊंगा। सांखली तो ऐसी (रानी) है जिसे एक घड़ी भी दूर नहीं किया जा सकता। हरदम पास ही रखा जाय—ऐसा रीझमान (मोहित) हो गया हूं। और उधर लालांजी को जो वचन दिया था उसका फिक्र भी हो रहा है।" प्रधान से इस प्रकार कहा। (तब प्रधान ने कहा) तो यहां से प्रस्थान करें यहां क्यों रहें ? डेरा को चलें। (तब अचलदासजी ने कहा) "हम तो सात मास तक यहां ही रहेंगे। अभी विदा नहीं होंगे। इतना कहकर अचलजी वापिस महल में चले गये और प्रधान को (गागुरन को) जाने की आज्ञा देकर भेज दिया (रवाना किया)।

प्रधान गागुरनगढ आया। प्रधान ने लालां को पत्र लिखकर

खसीद के हाथ दिया—"सालांजी ! तुम्हारा पति जो पहले था, अब वैसा नहीं है। घर आने की (बात) नहीं करता है। सांखली पर मोहित हो गया है। तुम पत्र लिख कर भेजना। ठाकुर जानते हैं कि घर पर आयेंगे तो सालांजी के बराबर्ती होकर रहना पड़ेगा। यहां रहते हैं वे ही घड़ियां (दिन) भली हैं। क्योंकि ठाकुर जानते हैं कि आपके साथ वे वचनबद्ध हैं। आप विचार करके उनको पत्र लिख भेजना। सालांजी को प्रधान के लिखे हुए समाचार सुन कर बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ। पैरों की ज्वाला सिर तक पहुँची। तब क्रोधावेश में अनेक विचार आने लगे कि क्या किया जाय ? तब विचार करके सालांजी ने एक पत्र लिख भेजा कि—राज[1] (आप इस पत्र के पहुँचने पर यहां) पानी भी नहीं पीकर यहां पधार जायें[1] और नहीं तो साला को मरी हुई जानना। मेरे लिये तो आपके समान कोई माननीय नहीं है। अपना जी तो अपने अधिकार में है। इसे आप सही जानना। इस प्रकार पत्र लिख कर भेजा। खसीद ने जांगलू आकर अचलदासजी के प्रधान को पत्र दिया और कहा कि पत्र ठाकुर को पेश कर दें। प्रधान पत्र लेकर दरबार में आया। (दरबार में आकर) मुजरा स्वीकार करे तब पत्र पेश किया जाय (परन्तु ऐसा तो कभी होता नहीं) मुजरा स्वीकार करते नहीं। तब सांखली की दासी के साथ पत्र भेजा और कहा तू जाकर ठाकुर को पत्र पेश कर देना। दासी ने पत्र ले लिया पढ़ा और ऊमांजी

---

[1] इस समय यदि आप भोजन करते हों तो आचमन यहां आकर करें।

को भी दिखाया। अम्मांजी ने उसको फाड़ कर डाल दिया। ठाकुर तक पहुँचा ही नहीं। तब प्रधान रीस करके अपने डेरे आ गया और अमीद को कहा— 'अम्मांजी को जाकर कहना कि तुम्हारा पत्र यहां किसी ने आंखों से भी नहीं देखा है। ठाकुर अब वे नहीं रहे। (आलां को जब यह समाचार मिले तब उसे बहुत गुस्सा आया और उठ कर बाहर चली आई और मोहते को बुलवा कर कहा—"चिता तैयार कराओ सो आलां उसमें जल जाय। मोहते ने कहा— 'क्षमा करिये। आप ऐसा क्यों बोल रही हैं ?" तब आलां ने कहा—"यह निश्चय जानना। तुम जल्दी करो। आलां न कहा सो सही है। इतना कह कर उठ कर चल दी। तब मोहता आगे फिरा और उसने कहा— 'राज ! खड़ी रहें। (मेरी बात सुनें) मुझ (मोहता) को जोगायत जाने दें। मोहता आलांजी का हाथ पकड़ कर अंदर ले गया और कहा— "अचलजी को लेकर आऊं तो मुझे आप अपना गुलाम जानना। आप निश्चिन्त रहें। मोहता ठाकुर को ले आयगा यह आप सही जानना।" इतना कह करके मोहता सवार होकर जोगायत का चला और जोगायत पहुँचा। वहां जाकर पहले प्रधान से लड़ा और बाद में ठाकुर को अपने आने की सूचना दी। तब ठाकुर ने मोहते को अंदर बुलाकर पूछा— 'तू यहां क्यों आया है ?" तब मोहते ने कहा— 'राज को यहां आये हुए सात मास हो गये हैं और यहां आकर बैठ रहे हो यह आचरण अनुचित किया है। मोमियों ने यहां डेरा को सूना कर दिया

है। राज ! यहां कैसे बैठ रहे हैं ? चारों ओर से मोमिनों ने हाथ उठा रखा है। देश में लूट-खसोट हो रही है। बुरा हाल है। जो राज अपनी धरती को बहाल रखने की आशा रखते हों वे यहां पराये देश में आकर क्यों बैठे रहें ? यह राज ! आप की जबरदस्त भूल है। अब यहां पानी भी नहीं पीकर घर पर पधारिये। राजा हो सो दूसरे के घर परदेश में आकर क्यों रहे ? अब आप जल्दी पधारो । मोहता अचलदासजी से खूब कहा तब अचलदासजी ने खीवसीजी को कहलवाया—"(हुर्लांणी)[१] प्रस्थान की तैयारी करायें। तब खीवसीजी हुलाये की तैयारी करने लगे। रथ-बहेल, हाथी-घोड़े सर्वस्व तैयार किये। तब खीवसीजी के अंतःपुर में जब इस बात की मालूम हुई कि अचलदासजी लालां मेवाड़ी को यह वचन देकर आये हैं कि उसके हुक्म बिना सांखली के रनिवास में नहीं जावेंगे तो खीवसीजी को इस की चिन्ता हुई। तब रानियों ने कहा—अचलदासजी लालां मेवाड़ी के वश में हैं। राज्य की व्यवस्था लालां के हाथ में है और बहुत जबरदस्त है और बाई उमां सीधी है। चारण मीमां को साथ में भेजें तो उसे धीरज रहे।

तब खीवसीजी ने धीटू को कहा—"चार मास के लिये मीमां को बाई उमां के साथ भेजें। बाई सब बातों से परिचित होकर समझदार हो जायगी तब मीमां को बुला लेंगे"।

(१) बेटी को प्रथम बार ससुराल विदा करते समय दिया जाने वाला दहेज।

चार मास झमां के साथ रह जायगी तब हम निश्चिन्त हो जायेंगे। तब चीठू ने कहा—"मीरां जैसी मेरी बहिन वैसी ही आपकी। मुझे क्या पूछते हैं? जैसा राज के विचार में आवे वैसा करिये।

(खींवसीजी ने) अचलदासजी को विदा किया। अनेक हाथी घोड़े और गायों-बाजों के साथ बाई झमां को विदा किया। मीरां चारणी को साथ में भेजा। खींवसीजी दस कोस तक पहुँचाने के लिये साथ में आकर और लौट कर वापिस अपने घर आये।

झमां को विदा की तब (अचलदासजी ने) मार्ग में चार मास बिता दिये। मीरां चीखा बजा कर गाती है और झमा और अचलदासजी का मनोरंजन करती है। अन्य पंद्रह दासियां जो झमां को (दहेज में) साथ दी थी वे जैसी टहल-चाकरी झमां की करती हैं उसी प्रकार मीरां की भी करती हैं। जैसी चौकोर में झमां बैठती है वैसी ही चौकोल (पालकी) में मीरां भी बैठती है। मीरां का इतना मान। अचलदासजी से जो भी बातचीत (परनोत्तर) करनी हो वह मीरां करती है।

इस प्रकार अचलदासजी को मार्ग में चार मास लग गये। सात मास वहां रह गये। कुल ११ महीने लग गये। बारहवें मास घर पर आये। नव वधू को बधा (मंगल गान-बाजों से स्वागत) करके महलों में प्रवेश करवाया।

आगे लालां मेवाड़ी बारह बाप और तेरह पीढ़ (अत्यन्त

कोपित) होकर बैठी है। यह कहती है कि—"आपने इतने मास क्यों लगा दिये ? आपने जैसा मेरे साथ किया वैसा तो कोई नहीं करेगा। रास्ते में भी आपने इतने मास लगा दिये ?

तब भगवतदासजी ने कहा—जो लग गये सो तो लग गये। अब तुम मान जाओ (राजी हो जाओ) तुमको जो वचन दिया है उसका पालन करेंगे। अब हम तुमारे लिये हैं (तुम्हारे अनुवर्ती हैं)। तब फिर बालांजी को भगवतदासजी ने कहा— 'सांखली को अलग कर दिया है। अपना महल बनवा कर दे दिया है। उसका एक छोटे से कमरे में बैठी परमेश्वर का नाम जपती है।"

भगवतदासजी को तो उमां आंखों से भी नहीं देखती है। तब उमांजी ने (एक दिन) मीरां को कहा— 'अब क्या किया जाना चाहिये ? एक-एक रात एक-एक वर्ष के समान हो रही है। अब तो ऐसी हो रही है कि जहां पूरी खाने को मिलती थी वहां अब आधी भी नहीं मिल रही है। क्या करूं ? कोई उपाय करना होगा नहीं तो यह जीवन कैसे बीतेगा ? तू जब वीणा बजाती है तब जंगल के मृग आकर तेरे सामने खड़े रहते हैं, इसी प्रकार यदि तू (अपनी वीणा से) भगवतजी को मोहित करके ले आये तो तू पक्की गुणराय (वीणा वादिनी) है।

तब मीरां ने उत्तर दिया कि भगवतजी को एक बार भी देख लूं तो उनको प्रसन्न कर दूं पर वे जब देखन में ही न आवें तब कम जार लग ?

एक दिन रूक्मां और मीरां गहरी नींद में सोई हुई थीं। स्वप्न में देवी ने कहा—'जो तुम गो–त्रिरात्र का व्रत करो तो जो तुम मन में इच्छा करोगी वही हो जायगा। स्वप्न के बाद रूक्मांजी जग गई और मीरां को कहा कि मुझे इस प्रकार का स्वप्न हुआ है।

तब मीरां और रूक्मां दोनों ने गो–त्रिरात्र का व्रत करना शुरू किया। गाय को जौ खिला कर और उसकी पूजा की जाती है। गाय जो गोबर करती है वह इकट्ठा किया जाता है और उसमें से जौ बीन कर उस जौ की रोटी बनाती है और उस रोटी से वे एकाशन करती हैं। इस प्रकार प्रति अष्टमी को व्रत–पूजा करते हुए सात वर्ष हो गये।

तब एक अष्टमी के दिन जब कि दो घड़ी पिछली रात शेष रही तब स्वर्ग से कामधेनु उतरी और जहां रूक्मांजी बैठी हुई जप कर रही थी वहां आकर खड़ी हो गई।

रूक्मांजी देखती हैं तो उसके सामने सोने के सींग और सोने के खुरों वाली गाय खड़ी है। रूक्मांजी ने उठ कर उसकी प्रदक्षिणा की और दंडवत् प्रणाम करके चरणस्पर्श किया।

तब कामधेनु ने कहा—मैं तुमको तुष्टमान हुई। मेरे सींग में जो हार लटक रहा है वह लेलो॥ तब रूक्मांजी ने हार ले लिया और सामने खड़ी रही। तब कामधेनु ने कहा— 'यह हार अमूल्य है। इससे तेरा भला (मनवांछित) होगा।' इतना कहने के साथ कामधेनु अदृश्य हो गई।

तब रुक्मांजी ने भीमां को जगा कर कहा— 'बधाई है। आपने से कामधेनु तुष्टमान हुई है। कामधेनु स्वर्ग से पधारी थी। मुझे अमोलक हार देकर कहा "तेरा भला होगा।" इतना कह करके अलोप हो गई।

इतने में प्रभात हो गया तब रुक्मांजी ने हार को पहिना तब सासांजी की दासी ने देख लिया। देख करके चकित हो गई। उसने आकर सासांजी को कहा कि— 'सांसुजी के एक ऐसा हार है जैसा मृत्युलोक में कभी नहीं देखा। अमूल्य है। ऐसा गहना संसार में नहीं है।

तब सासांजी ने बडारण (दासी) को भेजा और कहा तुम हार मांग कर ले आओ। देख करके वापिस कर देंगे।

तब बडारण रुक्मांजी के घर आई तो रुक्मांजी ने बहुत मान-सम्मान दे करके उसे पूछा— 'तुम किस काम के लिये यहां पधारी हो।" तब बडारण ने कहा— 'आपके पास जो हार है उसको सासांजी देखने के लिये मांग रही हैं। देख करके वापिस कर देंगे। जो आप दें तो सासांजी को दिखाकर ले आऊं।" तब रुक्मांजी ने कहा—"जो वापिस लाकर दे देओ तो ले जाओ।"

तब तश्तरी में हार को रखकर बडारण के हाथ दे दिया। बडारण ने उसे सासांजी को लाकर दे दिया। सासांजी उसे देख कर अचम्भित हो गई।

लालांजी ने बजारए को पुन: सांसली के पास भेजा और उन्मांजी और मीमांजी को कहलवाया कि यदि आप कहें तो हार पहिन कर ठाकुर को मुजरा करू । तब उन्मांजी और मीमांजी ने उत्तर में कहलवाया कि यदि एक दिन के लिये ठाकुर को मेरे रनिवास में भेज दो तो हार पहिनने की आज्ञा दू । लालांजी ने प्रत्युत्तर दिया कि 'एक दिन के लिये तुम्हारे रनिवास में भेज दू गी।' यह वचन देकर हार (पहनने के लिये) मांग लिया।

तब लालांजी ने स्नान-मंजन कर सोलह शृ गार किये (और हार पहिन लिया)। और फिर लालांजी अचलदासजी को मुजरा करने पधारी। तब अचलदासजी ने कहा— 'यह हार कहां से आया?' लालांजी ने कहा— 'यह हार मेरे पीहर से आया है।" अचलदासजी ने कहा— 'मेवाड़ के स्वामी के घर ही ऐसे नगीनों वाले गहने हो सकते हैं और कहां हो सकते हैं? दाना मोकलसी धन्य हैं जिनके घर में ऐसे गहने होते हैं।

फिर अन्य इधर-उधर की बातें करके सो गये।

प्रभात हुआ तब लालांजी ने अचलदासजी को कहा—"एक बात का वचन देओ तो आज आपको सांखली के जाने की आज्ञा दू।" तब अचलदासजी ने कहा—"किस बात का वचन मांगती हो? लालां ने उत्तर दिया कि—"जो आप अपना बाना नहीं उतारें बाना पहिने ही सोएं और बात-चीत करके वापिस पधार जायें तो सांखली के घर जाने की आज्ञा दू।

अचलजी ने तब बांह दी और कहा कि— बाना नहीं

पधारे गा। तुम हुक्म करो तो आज की रात यहां आ करके सोऊं।

मालांजी ने हुक्म दे दिया और संध्या हुई तब अचलजी उमांजी के घर चले गये।

(अचलदासजी के यहां आने पर) उमांजी खूब हर्षित हुई। कहने लगी— "आज की घड़ी धन्य है और धन्य है आज का दिन। आज का दिन भला उदय हुआ जिसमें सात वर्षों से ठाकुर का मुंह देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आनन्द उत्सव हुए। ढोलिया बिछाया गया और ठाकुर को भीतर प्रवेश कराया (ढोलिये पर बिठाया)। मींमां आगे बैठी हुई वीणा बजा रही है और उमांजी सामने हाथ जोड़ कर खड़ी है। अचलदासजी ने उमांजी का हाथ पकड़ ढोलिये पर बिठाया और बातचीत करने लगे। मींमां सम्मुख बैठी वीणा बजाती हुई गा रही है और ठाकुर को रिझा रही है।

इतने में आधी रात हो गई तो भी ठाकुर न तो अपना वागा उतारें और न कटारी को ही खोलें।

तब मींमां ने कहा—"राज! हथियार खोल करके पोढ़िये। परंतु ठाकुर तो कटारी बांधे ही सो गये। उमांजी पगचंपी करने लग गई। मींमां ने देखा-ठाकुर का कटारी खोलने का विचार नहीं है, तब मींमां ने आसावरी राग में गायन गाना शुरू कर दिया।

मानन के दोहों का भय

उन्मादे रानी का अपचलजी से रूठना हो गया। प्रिय को कैसे मनाया जाय ? बिछुड़े हुए मान वप हो गये। कैसे निर्वाह होगा ॥१॥

स्वादिष्ट पेय से लबालब भरा हुआ मनोहर कटोरा जिस प्रकार छलकता है, प्रियतम भी वैसे ही छलकते हुए यौवन वाला होना चाहिए। वैसे यौवन और मदभरे इस पति का अपने दोनों स्तनों के बीच इन दो स्तनों के अतिरिक्त तीसरा इसे अपने वक्ष स्थल पर अमोलक हार की भांति झुलाती ॥२॥

पत्नी जग रही है और पति (उपता से) मर रहा है। चन्दन का पलंग और कस्तूरी से सुवासित घर किस काम का ? इस पर आग को जला डालू ॥३॥

मैं तो सीस गुथवा कर और नवीन रेशमी वस्त्राभूषणों से शृंगारित होकर पे आई किन्तु अपचलजी ने एक अयाची सिद्ध महात्मा की भांति मेरी कोई सार-सँभाल ही नहीं ली ॥४॥

जिन वस्त्राभूषणों से शरीर को वेष्टित किया था उन्हें वापिस समेट कर रख दिया। क्योंकि न तो अपचलजी ने पत्नी को जगाया (बतलाया) और न पत्नी ने अपना स्वाभिमान छोड़ कर अपचलजी को बतलाया ॥५॥

पति से मिलने के लिये हार को खोना पड़ा वीणा-वादन और संगीत द्वारा अनेक भांति के प्रयत्न किये। स्वाभिमान और अम का त्याग कर यह सब कुछ किया किन्तु मुझ अभागिनी

हमारे को पति का प्रेम नसीब नहीं हुआ। प्रारब्ध की बात है ॥६॥

कृत्तिका नक्षत्र शीर्षाकाश से ढल गया और मृगशिरा नक्षत्र भी उदय होकर चमकने लगा है। लेकिन हार के बदले में जिस पति को बुलवाया गया है, वह इतनी रात जाने पर भी न तो हँस करके बात करता है और न सामने ही देखता है ॥७॥

प्रिय के आने पर मैंने समझा था कि आज का दिन धन्य आज की घड़ी धन्य है। लेकिन कोई काम नहीं बना। हार भी गया और प्रिय सोता ही रहा ॥८॥

मुझ प्रियतमा की सारी रात पुकारते-पुकारते और रोते-रोते बीती लेकिन प्रियतम नहीं चेते। मेरा कोई राम काम नहीं आया ॥६॥

इस प्रकार प्रभात हो गया। तब झालांजी ने दासी को भेजा और कहा कि जा करके ठाकुर को ले आ। दासी ने आकर कहा—

दोहे का अर्थ

प्रभात हो करके प्रकाश हुआ गोधन (गांव की गायों और भैंसों का समूह—गोहर) जंगल में चरने को चला गया। उस समय ठाकुर मेवाड़ी की दासी ने आकर कहा—"ठाकुरजी! आपका सब काम बन गया अब हमारी झालीजी के वल्लभ को हमें दे दीजिये' ॥१॥

तब मीरां ने उत्तर में ये दोहे कहे—

दोहों का अर्थ

प्रभात होकर के सूर्योदय हुआ गोपन और उनके बछड़े जंगल में चरने को चले गये। अब हे आली [1] तुम्हारे पति को सम्हालो। हमारा तो गहना-हार भी डूल [1] होगया ॥११॥

आली लालची है और ऊमां अपार रूप वाली है। टट्टू पर सवार होने वाला अचलजी ऐराकी घोड़े पर नहीं चढ़ता ॥१२॥

इतना कहकर मीमी खड़ी हुई और अपनी बीया को छोड़ दिया। इधर ऊमांजी ने दासी को पलंग से नीचे गिरा दिया। उस समय मीमा चमक करके खड़ी हो गई। तब अचलदासजी ने मीमां को क्रोधित देख करके पूछा— 'तू केहने हार सटै मिय आणियो।

कुछ देख कर पुनः कहने लगे—

'ने सखी थांको लालहो म्हांरो गहणे डूलो हार। सो हार के संबंध में क्या बात है?

तब मीमां ने क्रोधित होकर कहा—"सुनिये थांके ठाकुर! आपको लालांजी ने बचा है और हमने आपको एक हार के बदले में खरीदा है। हमारा हार भी गया और आप भी गये। हमारा तो कोई काम ही नहीं बना।

---

१ डूल होसो—रहन रखी हुई वस्तुओं को अवधि के भीतर नहीं देने या नहीं छुड़ाने पर, (रहन रखी गई) उस वस्तु के ऊपर से उसके स्वामी (धणी) का स्वत्व हटकर महाजन का स्वत्व (अधिकार) हो जाना।

अचलजी को जब इस बात का पता लगा तो उन्होंने कहा—"हमको लालां ने हार के बदले मे बेचा है और हार को मेरे से अधिक समझा है ?" मीरां ने उत्तर दिया—'हां राज ! आपको हार के बदले में बेचा है।

तब अचलजी कहते हैं—

शीतल पवन के चलने से पीपल के पत्र चलायमान हो गये। (रहस्य खुलने पर हृदय को संतोष हुआ) अचलजी ने प्रसन्न होकर कहा—लांसली! सेज बिछाओ। खीची राज अब तुम्हारे साथ रमण करेगा ॥१३॥

अचलजी ने पुन क्रोधित होकर कहा—'तू पहले मेरी जाकर इधर दे तो लालां के घर पर आने की (हाथ में पानी लेकर) शपथ ल । तब ऊमांजी ने कहा—'नहीं राजन्! (आप ऐसा नहीं करें) आपका वचन जाता है। शपथ मत लीजिये। यदि आप मेरे पर कृपालु होते हैं तो मुझे एक बात का वचन देकर पधारें।" तब अचलजी ने कहा—'अच्छी बात। कौन सी बात के लिए वचन मांगती हो ? बताओ तो मैं तुमको दू। ऊमांजी ने तब कहा—"मेरी दासी जिस समय आपको बुलाने के लिये आवे तो आप थूक इधर पधार कर गिरें (उसी क्षण वहां से रवाना होकर आ जायें)। इस बात का वचन देकर लालांजी के घर पधारें।

इस बात को आठ दिन हो गये। अचलजी और लालांजी महल में बैठे हुए चौपड़ खेल रहे थे। रात लगभग आधा हुआ

और उसमें रस आया त्यों ही उमांजी ने दासी को यह कह कर भेजा कि-"तू जाकर के शीघ्र ही अचलजी को यहां से ले आ। तब दासी ने जाकर कहा—"राज को सांखली ने (अपने यहां आने के लिये) बुलवाया है। अचलजी जब उठने लगे तो सांखांजी ने वस्त्र का छोर पकड़ कर कहा- मेरा यह खेल पूरा करके पधारें। अचलदासजी ने कहा-पूरा कैसे करूँ ? वचन देकर के आ आया हूँ। तुमने मुझे भेज दिया तब तुमने नहीं जाना ? इतना कह करके खड़े हो गये और वस्त्र-छोर को झटक करके छुड़वा लिया और रवाना हो गये। सांखांजी को भी क्रोध आ गया और क्रोधावेश में यह शपथ ले ली कि तुम्हारी पत्नी बन कर रहूँ तो राना मोकलसी की पत्नी बनू (तुमसे सहवास करू तो राना मोकलसी से करू)। अचलजी उमांजी के महल पधार गये और आनंद हुआ। उमांजी और अचलदासजी के मरणपर्यन्त खूब संताप से निर्वाह हुआ।

दोहों का अर्थ

सांवर के पश्चात् के केलि-वसन में जो दुर्भाग्य उत्पन्न हो गया था अब बड़ी कठिनता से स्नेह वृद्धि हुई है। गढ़ गागरून (=खीची अचलदास) और जांगलू (=उमां सांखली) में परस्पर भगवान ने पुनः स्नेह-संबंध स्थापित कर दिया ॥१४॥

खीमां ने सांखां के अभिप्राय (कपट-व्यवहार) को समझ कर आसा राग को आलापा जिससे महाराज (अचलदासजी) प्रसन्न हो गये। आज का दिन धन्य है ॥१५॥

अड़बा (१८-१२)=भिड़ने पर, अड़ने पर
अणपार (१२-८)=अपार
अणी (१८-१)=सेना
अणीपाखी (६-४,५)=१ सेना आत्माभिमान
अति (१४-६ १२)=बहुत
अति बिन बेरम (१४-१२)=बहुत बीम
अतुळी (१८-१)=अतुल अपरिमित
अचार (६-६)=आचार
अन (१४-८)=अन्न
अनइ (२१-११ १७)=अन्य और
अनम (२१-१५)=अनि
अनि (२१-२७ २२)=अन्य दूसरे
अनिबच (२१-२)=निरन्तर, बिना रोक टोक के
अनियइ (१४-१५)=और (अन्यत्)
अनिमै (२१ १८)=और (अन्यत्)
अनेक (२१-४ ६-१)=बहुत से
अपणइ (२१-२४)=अपने
अपार (११-५ २१-११)=बहुत
अपार (१)=बड़ा
अब (४-२)=अब
अबइ (२१-७)=अब
अबला (१५-५ २१-७)=अबला स्त्री
अभिमान (२१-८)=अभिमान घमंड गर्व
अमराव (६-१)=अमीर

अमी (४-१)=अमृत
अम्हारइ (२१-१)=हमारे
अम्हे (२१-८)=हम
अर (१२-१ ११)=और
अरथ (१५-२)=अर्थ धन
अरथ-भंडार (२१-१)=धनागार, खजाना
अरधो-अरधी (२१-१)=आधे-आधे
अलाउदीन (६-५)=अलाउद्दीन
अलावदीन (१७-१)=अलाउद्दीन प्रसिद्ध खिलजी-वंशीय सुलतान
अचम्भ (९)=आश्चर्य अकथनीय
अवछोडि (१४-६)=छोड़-कर
अवगणि (१४-११)=छोड़कर
अवरछे (१२-६)=छोड़ कर
अवधू (२१-१)=अवधूत
अवधू-पुरषारथ (२१-१)=अवधूतों जैसा पुरुषार्थ अवधूतों के जैसा आचरण
अवर (६-२ ५-२)=और
अवर (२१-११ २१-८)=और
अवरै (२१-४)=और (भी)
अपहुटइ (१६)=पीछे हटते हैं
अपहुटया (११)=हटता हुआ
असुर (१-२)=मुसलमान
असुर (१-४)=दैत्य
असुर-सैन्य
असुर (१४-१४ २१-२६)=शत्रु, यवन

अनेक (१२-४)=अनेक
अस्टमी (२१-१)=अष्टमी तिथि
अस्त्रीजन (१५-५ २१-७)=स्त्री लोक स्त्रिया
अस्समेध ज्याग (२१-५)=अश्वमेध यज्ञ
अहंकार (१७-१ २१-८=गर्व
अहंकारि (६-६)=अहंकार (वश) में
अहंकारि (१४-१९)=अहंकार पूर्वक
अहित (२१-६)=बुरा
अहितु (२१-६)=बुरा

आ

आंगवइ (२४)=अंगीकार करे, अपने पर ले
आगामभी (१८-१)=आगे, अंतावलि
आगावलि (२९-२४)=आज्ञा का समूह
आगू (२१-१९)=आगू
आइ (१५-५ २१-७ १२-५ १४-११ १७-१ २१-१ ११)=आ करके
आइ आइ (२९-१४)=आ-आकर
आइस्या (६-६)=आज्ञापालन करने वालों में
आइसि (२९-११)=आदेश से आज्ञा से अनुमति से
आकास (१७-२)=आकाश
आखइ (१४ १ १२-२)=कहता है
आगइ (६-४)=अपने
आगला (२१-१)=अगले
आगा (६-१)=आगे सामने
आगि (२९-११)=अग्नि
आगिलउ (४-२ =अगला आगे का
आगिली (२५)=अगली (अब कहा और कहे लिया जाय इसकी)
आगिलेउ (६-५)=पहले के
आगी (१४-१२)=आगे
(१४-२)=अग्र भाग
आगी (२५)=आगे
आगी आवइ (२१-८)=आगे आते हैं
आगेहि (२९-१४)=आगे
आचारज (१७-१)=आचार्य चतुर
आछइ (४-१)=अच्छे
आछु (६-४)=आज
आजूणउ (२९-२)=अज्ञान आज का
आडी (१४-९)=सामने बीच में आकर रक्षा करने वाली
आणइ (२४)=लावे
,, (२१-८)=लाते हैं
आणि (१२-१)=ला
(२४)=ला कर
आणिअइ=(१२-५)=लाया
आतम (२७)=आत्मा को
आथम्यउ (६-४)=अस्त होगया (अस्तमित)
आदि (२७)=आरंभ का, प्राचीन मूल

झमारे का अचलजी से जो रूठना था वह मिट गया और उसके मन की आशाएं पूर्ण हुई। वाटिका में सुगंध प्रगटी और वह चारों दिशाओं में प्रसर गई ॥१६।

बात

झमांजी और मीरां का कामधेनु के तुष्टमान होने से मनवांछित हुआ।

गौ माता जिस प्रकार झमांजी और मीरां को तुष्टमान हुई उसी प्रकार जो यह गोत्रिरात्र व्रत करेगी उनको उसी प्रकार गोमाता तुष्टमान होगी।

इस झालां मेवाड़ी का यह रूठना लोक गीतों में गाया गया है जिसको सभी जानते हैं अत उसे यहां क्यों लिखें ? (यहां लिखने की आवश्यकता नहीं।)

(इसके बहुत समय बाद जब) अचलदासजी पर बादशाही फौज चढ़कर आई उस समय अचलदासजी के रनिवास की चालीस हजार स्त्रियों ने जौहर किया। अचलदासजी इस युद्ध में काम आये। झालांजी और झमांजी दोनों सती हुई और झालांजी का रूठना मिटा।

इति श्री अचलदासजी झालांजी झमादेजी की बात संपूर्ण। शुभं भवतु। कल्याणमस्तु। सं १७४८ आषाढ कृष्ण दशम्यां।

अनेय (१२-४)=अनेक
अस्टमी (२१-१)=अष्टमी तिथि
अस्त्रीजन (१६-५ २१-७)=स्त्री लोक
स्त्रियां
अस्वमेध ज्याग (२१-५)=अश्वमेध यज्ञ
अहंकार (१७-१ २१-८ =गर्व
अहंकारि (६-६)=अहंकार (वश) में
अहंकारि (१४-१६)=अहंकार पूर्वक
अहित (२१-६)=बुरा
अहितु (२१-६)=बुरा

आ

आपमइ (२४)=अंगीकार करे,
अपने पर से
आखावली (१८-२)=बातें, अंखावलि
आखावलि (२६-२४)=बातों का समूह
आगू (२१-१६)=आगू
आइ (१५-५ २१-७ १२-५,
१४-१६ १७-१ २१-१ ११)=
आ करके
आइ-आइ (२६-१४)=आ-आकर
आइन्हा (६-६)=आज्ञापालन करने
वालों में
आइवि (२६-१३)=आदेश से आज्ञा
से अनुमति से
आकास (१७-२)=आकाश
आवइ (१४ १ १२-२)=रहता है
आकइ (६-४,=अपने

आगमा (२१-१)=आगे
आगा (६-२)=आगे सामने
अगि (२६-११)=अग्नि
आगिमउ (४-२ =अपना आपे का
आगिली (२५)=अगली (अब तक और
कैसे किया जाय इसकी)
आगिलेउ (६-५)=पहले के
आगी (१४-१२)=आगे
(१४-२)=अग्र भाग
आगी (२५)=आगे
आगी आवइ (२१-८)=आगे आते हैं
आगेहि (२६-१४)=आगे
आचारज (१७-१)=आचार्य चतुर
आछइ (४-१)=अच्छे
आजु (६-४)=आज
आजूणउ (२६-२)=अद्यतन आज का
आडी (१४-६)=सामने बीच में आकर
रक्षा करने वाली
आणइ (२४)=लावे
„ (२१-८)=लाते हैं
आणि (१२-१)=ला
(२४)=ला कर
आणिसउ=(१२-५)=लाया
आतम (२७)=आत्मा को
आथम्यउ (६-४)=अस्त होगया
(अस्तमित)
आदि (२७)=आरंभ का प्राचीन मूल

उवर (२)=उदर मनुष्य
उदक (१४-८)=उदक जल पानी
उदास (२१-११)=दुखी
उपकंठि (१-४)=पास में
उपरामठ (१४-२)=
उवारिसइ (२१-१२)=उबारा जाय
बचाया जाय बचाइये
उमरखान (६-१)=एक सरदार का नाम
उरजन (११-२)=अर्जुन
उल्लंघइ (२४)=पार करे
उवहि (२४)=समुद्र को
उसमानखान (६-१)=एक सरदार का नाम
उहां (२१-१२)=वहां

ऊ

ऊंचा (१२-४)=ऊंचे
ऊगा (२६-१२)=उगने पर
ऊगउ (२६-२७)=उगता हुआ
ऊजालिमि (१४-५)=उज्ज्वल पक्ष की
ऊठि (१४-१२, २६-२७) उठ कर
ऊठिसी (२६-११)=उठेगी
ऊणी (२१-६)=न्यून कम
ऊदौ (१५-६ २१)=एक नाम
ऊपरली (२१ १४)=ऊपर होती
हुई (बात)
ऊवारउ (२१-८)=उबार करें।
ऊदा (१५-१)=एक नाम
ऊवारइ (५-२)=उबार (बचाई करने को)
ऊमरि (१-२)= ?
ऊमरि (६-१)=ऊपर
ऊपरइ (२१-१२)=ऊपर
ऊह (१४-२)=
ऊहगर (२४)=

ए

ऐ (४-२)=यह
(११ २१-८)=ये
एक (२ २१-१ ४-१ २१-११
१५-७)=एक
एक (१४-१२)=एक कई
एकह (७)=एक ही में
एकइ (६-५)=एक ही
एक-एकपरी (१ -२)=एक-एक से
ऊपर, एक दूसरे के ऊपर
एक-एक हुइ (१५-४)=एक-एक
होकर, अलग-अलग
एकठि (१४-१४)=एक
एक-मता (इ) (२६-११)=एक मत
किए हुए
एकमल (१५-१)=एक नाम वीर,
अकेलों से अकेला लड़ने वाला
एकाकामी (२६-१६)=
एकि (२१-२)=कई
एकि (२६)=एक कुल
" (२६-१५)=एक
एतरइ हिज (४-२)=इतने ही

ओतरी (२४)=इतनी
ओतु (७)=इतना
ओतउ (२१-११) इतना, ऐसा
ओही (२)=यही

ओ

ओलि (१७-२=पंक्ति
ओलिगाएा (१४-१२)=सेवक ?

क

कंठि (२७)=कंठ में ?
कंउ (१४-६)=है पति
कंदरि (२)=कदरा में गुफा मे
कंधार (१-२)=मुसलमान (कंधार के)
कधारि (१४-१६)=यवनों के
कंधि (१०-१)=कधे पर
कंवर (२६-२१)=कुमार
(२६-२८)=कुमार
कंवरि (२६-७)=कुमार ने पुत्र ने
कंवम (२६-१२)=अमम
किवाड (६-६)=कपाट रक्षक
कु हम (२४)=?
कु वर (६-२)=कुमार
क (१२-७)=
कइ (६-२ ६-४ १२-६ १२-७ १४-११ १०-२ २१-६) के (१) को (मे)
कउ (६-४ ७ ६ १२-१ ८ १ २१-७ १२-२ २१-३ ७ २१-१ १२) का
कवण (६-३ ४ २४)=कौन
कवण सउं (२१-८)=किस से
कवण-हूइ (६-४)=किस के प्रति किस से
कउतिग (२१-६)=कौतुक
कछम-ही-रा (१२-२)=कछमसिंह के (पुत्र वंशज)
कछवाहा (१२-१)=कछवाहो के
(१२-३)=कछवाहों मे
कछवाहा (१२-१)=एक राजपूत वंश
कछवाही (१४-६)=कछवाहा वंशीय रानी
कटक (२-१)=सेना
कटकदल (६ ६-१ ११ ६-३)=सैन्य-समूह
कट्टारउ (८=कटार
कठ (२७)=काठ (की) ?
कडुवा (८)=कटु
कग्ग (२१-१४)=क्षम करण दाता
कथइ (४-१)=कहता है वर्णन करता है
कथन (१४-३)=कथन कही हुई बात
कथित (८)=कथन
कवीर (२१-)=एक साधारण बाबु
कमर (११ २१-८)=कोमा
कनेष्ट (१२-४)=कनिष्ट ?

कन्हु (२७)=चौहान वंशीय एक वीर जालोर का स्वामी
कनइ (१-२)=पास पास में
(१२-१)=पास
कबहिं (१२-६)=कभी
कमध (१८-१)=कबन्ध
करइ (२६-११)=करती है
(१२-८)=करता है
करउ (२१-६)=करो
करक (२१-१)=हड्डिया
करण-धार (२१-१६)=करने के कार्य करणीय
करणीक (१४-१५)=करने वाले
करता (२१-१५)=करते हुए
करहिं (२७)=?
करा (२१-८)=करें
करि (२१-६ १-२ ६-१ २१-१२ १४-११ २६-२७)=करके
(८)=हाथों में
करिमार (२७)=करवाल तलवार
करी (१९-४ १४-६)=करके
कलस (११-७)=कलश
कस्य (६-४ १२-५)=कहा
कलि (१४-१५)=कलियुग में युद्ध में ?
कल्याणसिंह (१५-२)=कल्याणसिंह
कवड़ी (७)=कौड़ी (का मूल्य)

कवण (२१-८ २४)=कौन
कवणइ (२४)=किस से
कवण कवण (१५-४ ६-१४)=कौन-कौन
कवि (४-२)=कवि काव्यकर्ता
कविगण (२)=कविगण
कसवट्ट (११)=कसौटी पर
कह (२६-२१)=
कहइ (११)=कहते है
(६-३)=कह कर ?
„ (२१-५ ४-२)=कहता है
(१४-५ ६)=कहती है
कहइ छइ (२१-५)=कहते है
„ (२१-६)=
(२१-१)=कहता है
कहणह न जाइ (१५-७)=कहा नहीं जाता है कहा नहीं जा सकता
कहत है (२१-६)=कहती है
कहता (१५-५ २१-७)=कहते हुए
कहा (२१-६)=क्या
कहि-कहि (२६-५)=कह-कह कर ?
कहि छइ (२१-४)=कहता है
कही (२१-६)=कही
कह्या (२१-१६)=कहे हुए वचन
कांइ (१२-६)=क्यों कैसे
कांई ही (२१-१२)=कैसे ही किसी प्रकार

कम (१२–१)=
किउ (२१–३ २१–८)=क्या काम
कोइ (१–१)=क्या
(२१–६)=क्यों
काहा (१२–१ २१–८ १३)=पत्नी
कावलइ (१२–१)=कमली के
कायउ (२१–३)=कोई
का (६–२ १४१ ११ १२–१ १५–२ २१–२ १–४)=के
का (१२–२)=के (पुन)
काइ (१२–८)=अथवा
,, (७ २१–६)=क्या किसलिए
कादम (१–४)=कर्दम कीचड़
कान्हड़ (१६–३)=एक नाम
कान्हड़दे (६–४)=जालोर का चौहान वंशीय राजा
कापुरिस (२१–१५)=कापुरुष हीन पुरुष
कायर (२१–१५)=कायर, डरपोक
कारणइ (४–२, २१–६)=कारण से
कारणि ( )=कारण से
कारिज (२१–८)=कार्य स्वार्थ
कारणामी (२७)=कामयाब की ? कीमार की ?
कालि (१–४)=समय
कालि (११–६)=कल
कालिकाइ दिवाई (२१–६)=कल के दिन कुछ दिन पूर्व ही
कासमीर (२)=कश्मीर देश
काहुउ (११)=क्या ?
काहि (१२–१)=कोई ? क्या ?
किणहि (१९–४)=किसी से किसी प्रकार
किम्हि (२४)=किस से
किना (१७–३)=अथवा
कियउ (२ १८ १५)=किया हुआ (कार्य)
(५–४)=किया
किरि (१२–८ २९–१२)=मानो
किमइ येक (१७)=किस प्रकार से
किसउ (६–६)=कैसा
किसउ-येक (१५–७ ८)=कैसा ऐक वैसा
किसी एक (१५–५)=कैसी एक, वैसी
किह (१२–५)=
किहां (२१–१२)=कहाँ ? किसो से ?
की (४–२, १४–१ १२ २१–१ ६–४ १ १७–५)=की
कीजइ (२१–१ ५)=कीजिये
(२१–४)=१ कीजिए
२ किया जाय
कीजयउ (२१–१६)=कीजियो

कीन (१४-१)=किये
कीन (८)=किया
कीनइ (१२-१)=
कीनउ (२६-१)=किया
कीना (२६-७ ८)=किये
कीनउ (१-२)=किया
कु-कवि (४-२)=बुरा कवि
कुण (१८-२ ६-६ २४)=कौन
कुणइ (६-६)=किस से
कुणा ऊपर (५-२)=किसके ऊपर
कुताब (१७-१)=कुराबी कुतबी
विनायक
कुम (१४-१)=गंध
कुम-बट्ट (२०)=कुल का मार्ग
कुल की चाल
कुल बहुआ (२६-१२)=कुल की बहुएँ
कुल बहू (१२-६ २१-८ ११)
=कुल-वधू
कुली (१४-११)=कुल गंध
कैसा हेला (१२-४)=
कैसा-हेला का (१२-३)=कितने एकों
के मिलने के
केरा ( )=के
को (१४-११ १२-१ ११)=कोई
कोइ (१२-२)=कोई
कोटे (१४-६)=
कोडि (२६-८ २१-६)=करोड़ कोटि
कोपि (८)=कोप करके
कोस (११)=कोस एक नाम
कोसीसां (१४-४)=कपिशीर्षक बुर्ज ?

ख

खंचइ (८)=(कोई) खींचता है
खंड-खंड (६-१)=खेप-खेप
खंड-विहंड (२१-१)=खंड-विखंड
टुकड़े-टुकड़े
खंडि (२७)=
खु नइ (२६-२ २१)=? खींचइ ?
खंदालिक (१८-२)=बादशाह
खउणालिम (६-१)=
(१ ५-१ ४ ८)=मुसलमान
मुसलमान बादशाह के
खग-खगा खणी (१८-१)=खड्ग से
खड्ग बजने लगे ?
खग्ग (१८-१)=खड्ग
खग्गां (१ -१)=?
खड़ (६-१)=घास
खड़िया (५-१)=चले
खत्र (२६-८)=क्षत्रिय
खरी (१८-२)=१ सच्ची हद
२ वास्तव में
खली (१८-१)=?
खाउज (६-१ ७ ६)=खड्ग हथियार
खाउज लियउ (६-७ ६)=युद्ध किया
खाइइ (२१-१)=खाई में

चालिजइ (२१–४)=चला जाय
चालिता (६–४)=चलते हुए
चलते समय
चाली (२१–१)=संभवतः चाल्यो चला
(२६–१ २१)=चलीं
चालीस (१५–२ २१–७)=चालीस
चाले (चालइ) (१८–३)=चलता है,
जाता है
चाल्यउ (६–१ २६–६)=चला
चाल्या (६–१ १४–१ २६–२१)
=चले
चाहियइ (२१–४)=चाहिए होना
चाहिए
चिन (२५)=चिन्ता
चिता (२५)=चिता
चिता-वस (२१–६)=चिता के वश में
चिता-वसंत (२१–२)=चिता के
वश में तो
चितुर (२७)=चैत्र मास, चितुर
चोलविपउ (६–१)=चोखा विचार
किया
चुहु (१७–२)=चहुँ, चारों
चुहुवलि (१७–२)=चारों ओर
चुहुर (११)=चारों
चुरि मदन (१५–७)=चूड़ीदार मदन

छ

छइ (६–४ ११–१ ११ १४–७
११ २१–३ ६ ११)=है
छइ (६–६)=थे
छउं (२१–६)=हूँ
छछोहि (२६–१६)=छोड़ के साथ ?
छत्तीस (१४–११ १५–३)=छत्तीस
,, (२६–५)=राजपूतों के छत्तीस
वंश प्रसिद्ध थे
छत्तीस राजकुली (१५–२)=क्षत्रियों के
३६ राजवंश
छत्र (१५–८)=राजछत्र
छमाछमइ (६–६)=छमछमाते
छलि (१२–४)=युद्ध में छल से ?
,, (१४–११)=युद्ध में ? धोखा ?
छाडइ (६–८)=छोड़ता है
छाडि (१–४)=छोड़ कर
छूटइ (१२–४)=छूटते हैं
छूटइ (१–१)=छूट जाते हैं
छूटा (६–१)=छूटे, बचे
छूटि न जाई (२६–१४)=छूटा नहीं
जाता ?
छेह (१८–१)=छोर, अंत किनारा
छेहि (२६–१४)=

ज

जाइ (२६–१)=जाता है
ज (२–८)=ही

पहवा(२९–२७)=पहने (के)
पताका (१२–७ =पताका
पति (१२–१ १४–११)=स्वामी
पतिसाह (१–१)=बादशाह, सुलतान
पधारिबो–चला गया (चल बारला)
पयाराउ (१–४)=प्रयाण चढ़ाई
पर (१६)=परि, भाति
परएउबह (४–१)=?
परवता (१–१)=पर्वतो (के)
परमाण=–प्रमाण मर्यादा
परवारि (२१–१)=परिवार मे
कुटुम्बियो मे
परसाव (१२–२)=प्रसाद ?
पवहुरियाह (१–२)=
परि (१–१ ११ २१–१२)=प्रकार
परिभाजनउ (२१–१)=बना हुआ
(प्रभाजन), ?
परिवार (२ १४–१४ ११ २१–११)
=कुटुम्ब
परी (१८–२)=ऊपर
परीक्षर (११, २१–११)=समझता है
(२१–१२ ११)=समझे
परीक्षानउ (११ २१–१२ ११ =
समझता हुआ
परीक्षवह (२१–११)=समझता है
परूपा (२१)=
पषाइ (१–१ =बीच

पलाण बाध्या (१–१)=जीन कसी
प्रयाण किया
पहु (१४ १४ ११)=प्रभु, राजा ?
„ (२१–१)=
(११–१)=राजा को
पहुगाई (२१–११)=पुष्पावती
मधुमहल की रानी का नाम
पहुली (११–२ =
पहि (११–२७)=प्रभु राजा
पहिली-की (२१–११)=पहले वाली है
पाति (११–१)=पात
पाइ (२१–११)=पैर
पाइक (१७–२)=पैदल सिपाही
पायदल (१ १२–७)=पैदल
पाइवड (२१–१)=पाया बायस
विशेष
पाखड (१–१ =पाखण्ड
पाखरूबड (४–१)=पाखर युक्त ?
पाखरूपा का (२१)=
पागार (१–८)=प्राकार, चहार दीवारी
पागार लंघित न होइ (१–८)=लांघा
नही जाता
पाछउपइ (२१–१४)=पीछे ?
पाछउपाछउ (२१ ११)=पीछे रहने का
पाछली (२१–११)=पीछे वाली
पाछिलइ (१–४)=पिछले
पाछिली (२१'=पिछली पीछे की

पाट (१५–८)=पट्ट ?
पाट्या (२१–४)=पट्टियां
पाडइ (६–१)=
पाडे (२१–२४ १)=गिरा कर
पाणी (१–४ ६–४ १ १)=पानी
पातल (१४–१२ १५–८)=प्रताप
(२१–१२)=प्रतार प्रचलदास
के एक पुत्र का नाम
पातखउ (१५–२)=पतला
पातसाह (६–१)=बादशाह
पातिसाह (६–४ ५ १ ७ ८ ११)=
बादशाह
पातिसाहि (६–१ ८)=बादशाह के
पावउ (१४–१)=धीवे तम्भार ?
पामा–एक बीर का नाम
पामा (? पौमा) (१५–२)=एक व्यक्ति
का नाम
पामियइ (१२–७)=मिलता है पाया
जाता है
पायाणड (६–१)=प्रयाण पयाई
पारम (१–१)=तय्यारी (प्रारम)
(१–२)=
पारंभि (१७–१)=प्रारंभ से तैयारी से
पार (६–७ १२–७)=अंत
पारावार (१ २१–१८ =पारावार,
पार, अंत
पारिखा (४–२)=परीक्षा परख
पाल्ट (१४–१५)=उलट-पलट

पाल्हउ (२४)=पाल्हणसिंह
पाल्हणसी (२१–१२ १५–२ २१–१
१२ १३ १४ १६ २२ २१ २४)
=पाल्हणसिंह, बाला का बेटा प्रचलदास
का ·····।
पाल्हा (१४–१२)=
पाल्हा-स्त्री (१४–१२)=पाल्हणसिंह की
पावक (२१–११)=अग्नि
पासि (२१–१२)=पास मे
पाहरू (२१–१)=पहरेदार ?
पिइ (२१–१)=पीइ
पिडि (२)=युद्धभूमि मे
पिण (२१–८)=पर, परंतु
पिशुण (२१–४)=शत्रु (पिशुन)
पीहर (१४–७) = मैहर, पितृगृह
पुडग (१८–१)=मछली (वर्षा अथवा वासवों
की) पगम ? प्रशंसा ?
पुनरवि (२१–८ १)=फिर
पुनरपि बाहुडि (२१–२)=पुन लौटा
करके फिर ला करके और अधिक
पुरसारथ (१६–१ २१–१)=पुरुषार्थ,
पराक्रम
पुरिस (१५–२ २१–१२)=पुरुष
पुरुष (२१–११)=पुरुष व्यक्ति
पुरुसारथ (६–७)=पुरुषार्थ शौर्य
पुस्तक (२)=पोथी
पुहराई (१४–१ १५–१ २१–८)=
पुष्पवती प्रचलदास की रानी

पुहुमि (१ २१-१८)=पृथ्वी (पर)
पुहुमिहि (२२)=पृथ्वी पर
पूँधि (२१-११)=गोंथ कर
पूछत हइ (४-२)=पूछता है
पूठि १४-१२ २१-२७)=पीठ पर पीछे
पूत (२ २१-१)=पुत्र
पूरब (४-१ ६-७ ६)=पूर्व
पूरी (२१-८)=
पूरू (४-४)=पूरा ?
पेख्या (२१-२)=देखे
पैठान्बिइ (२१-२५)=
प्रउढा (१४-२ २१-७)=प्रौढा बड़ी अवस्था की
प्रवा (१४-१)=रक्षत मे
प्रतपिप्पय (२१-११)=उपना उसिको प्रताप फैलाइयो
प्रति (२१-१)=को से
प्रम (२१-१)=भावं अवसर
प्रम पुर=परमपुर, परमलोक बैकुंठ
प्रति (२-२)=मे
प्रवाशा (९-७)=बीर-कार्यों (पराक्रमों) का
प्रवाह (२१-२)=नाले
प्राली (६-६)=पहुँच
प्रिथमी (२१-११)=पृथ्वी पर

फ

फतैखान (९-१)=एक सरदार का नाम
फरफटी (१७-२)=
फल (२१-५)=फल
फिरह बइ (१५-४ २१-७)=फिरती है
फूटइ (२१-१२)=फूट सकती है विध्वस्त की जा सकती है
फैरह (११)=ओर

ब

बंधि-छोड़ (९-२)=बंदी से छोड़ने वाला ?
बंधी (१-४)=बांधने वाले
बइठी (१७-२)=बैठी हुई
बतीस (९-१)=बत्तीस
बधि (२४)=?
बधिया थाहि बंधि पुराया (१७-१)= बड़ी बादशाहो के बन्दो के लिए पुरानी रूप
बधी (१८-१)=बलवान
बहुदा-बहुदी (२१-७)=याद करके बार-बार करे, होड़ लगा करके
बहु (१४-६ १८-१)=बहुत
बाखडं (१)=बाखता हू रखता हूँ
बाखियइ (२१-४)=बाखिये बांधे जावे
बाई (१२-६ २१-८ ११)=बहुत स्त्री के नाम के साथ जुड़ने वाला एक शब्द
बादशाहकी (१८-१)=बादशाहो की प्रबली
बाप (१४-६ १७-१)=पिता (को)
बाप बाप हो (१७-१)=अरे बाप ! (विस्मयादिबोधक)

बाणहतार (१४-११)=बहाना बैठे हुए
बारह (१-१ ११)=बारह
बारह सब (१-१)=बारह बाल की
माय बाला
बारह साहि म्बर (१७-१)=बारह
बादशाहों को म्बकने बाला ?
बारहट (११-४)=बारम्हट एक जाति
बारि (२१-१)=बार पर
बाल (१९-१ =बाल
बालड (९-९)=बालक ?
बाला-कउ (११-२)=बाला का (पुत्र)
(२१-१)=
बालाबत (२४)=बाला का पुत्र
पाल्हणसिंह
बाल्मै ११-१ २१-७)=बाल्यावस्था
की छोटी प्रवस्था को नवयुवती
बाहिरउ (२१-११)=बिना
बाहुडि (२१-१)=लौटाकर, फिर कर
फिर
बिन्हे (१८-१ २)=दोनो
बिहुँ (१८-१)=दोनो
बीज (२१-१४)=बीज
बीजिवइ (२१-१४)=बोइये
बोना चाहिए
बीस (११-८)=बीस
बीस पुगाइ (२१-७)=बीस पुगे
बु दी (९-२)=एक नगर का नाम
बेटा (१४-१)=बेटा पुत्र

बेगुण (१४-१)=
बोल (२१-८)=वचन
बोलइ (१४-७)=बोलती है
बोलतउ ही हुवउ छइ (२१-१)=
बोलता हुआ है बोलने लगा है
बोला है।
बोलतउ हुवतउ (२१-१)=बोलता
होता है बोलने लगता है
बोल्लिउ (२१-१२)=बोला हुआ
बाहमणा (११-४)=ब्राह्मणो

म

भड (१४-८)=भट, योद्धा
भड किवाड (९-९)=भट-कपाट
वीरो का किवाड किवाड के समान
वीरो का रक्षक
भडि वाइ (१४-७)=वीरो के शस्त्र
संचालन के समय युद्ध के समय
भरतार (१४-४ ११-२ ५ २१-७)
पति स्वामी भर्ता
भरी (२२)=भर कर
भलउ (१४-४ ७)=भला श्रेष्ठ
भला भला (२१-११)=अच्छे-अच्छे
भला भलेरा (९-५)=अच्छे-अच्छे
भलेरा (९-५)=अच्छे
भांनि (१२-१)=बनावट ?
भाइ (२१-५)=
भाई (१४-१)=

मद-वेध (६-१)=मदमरेध
मद-भरित (६-१)=मद भरे हुये
मदिमत्ता (२१)=मदमस्त
मदोन्मत्त (६-१)=मदमत्त
मध्यम (२१-८)=मध्यम बीच के
मन (१४-१)=चित्त
मन माहि (२१-६)=मन में
मनि (१६-४ १४-४ २१-१)=मन में
मनि (१४-१)=मन (के)
मरइ (१-१)=मरे, मरता है
मरउ (२१-१)=मरो, मारा जायगो
मर वाइ (१-१)=?
मरण (११-२ १४-१ २१-१
२१-१)=मरना
" (२१-१)=मरने को
मरणीय (१४-११)=मरने वाले
मरता (२१-१)=मरते हुए
मरता-मारता (२१-१)=मरते हुए
और मारते हुए
मरा (२१-८)=मरती है
मरट (२१-२१)= ?
मरिवा (६) (१४-१)=मरने को
मर्दन (१७-१)=मर्दन करने वाला
मल (११-१)=मास
(२१-१)=
मरहुपनी (२१-१२)=धीमी चाल से
चलती हुई
मसाण (२१-१)=श्मशान
महमन (११-१)=एक नाम
महमि (१५-१ २१-८)=पत्नी
महा (१४-८ २१-१)=बड़ी
महा अष्टमी (२१-१)=
महाबाण (४-१)=बड़ा बाण
महा भर (६-१)=बड़े चोर ?
बड़े प्रबल ?
महा-भड़ी (१८-१)=बड़े भारी
महि (२१-१)=पृथ्वी ?
(२१-१६)=में
महिखासुर (१-१)=महिषासुर
महिराम (११-२)=एक नाम
महिसासुर (१-१)=महिषासुर नामक
दैत्य ?
मांडउ (२१-१)=माडो बनायो
मावध (६-३)=मालु नगर
माहि (४-१ १ ११-२ २१-२ ६=में
माइ (१-१)=है माता
(६-१ २१-१)=मों
(२१-११)=मैं
माइ-बाप (२१-८)=माता-पिता
माई (६-४)=मां
माणस (१४-११)=मनुष्य
मार्तण्डपुरी (६-२)=
मारुव (११-१)=एक मारवाड़
माथा (६-४)=सिर

राणी (११-२ २१-७)=रानी राजा की स्त्री

राति (१८-२)=रात मे

राति-दिवस (२१-२)=रात और दिन की

राम (१-३)=रामचन्द्र मे

रामाइस (१-३)=रामायस युद्ध

रामवधि (२१-२)=राजांगन में राजभवन के आगन मे

राय (१२-१८ १४-११ ११-१) =(सं राज)—राजा, सामंत

रावस (१-१)=लंका का राजा रावण

राय-रावा (११-१ ११)=राजा लोग

रिखि (११-४)=ऋषि

रिप (१७-१)=युद्ध

रिस खेति (१-१)=रणक्षेत्र मे

रिसथंभउरि (२१-१)=रणथंभोर नगर मे

रिस धावरा ताहि चहा थंभ (१७-१) =रस से भागने वाले राजाओ के लिए जय स्तम्भ

रिसमल-कुल (११-१)=रणमल्ल के (वंशज)

रीस (१-४)=ईर्ष्या बराबरी ?

रुधिर (२१-२)=लोहू

„ (१८-१)=लोहू से

रुधिर (२१-१)=रुधिर

रूठउ (१-४)=कुपित हुआ

रै (११-७ २१-१४)=अरे !

रोल (२१-१)=एक वीर का नाम

रोवण लगा (२१)=रोने लगा

ल

लंका (१२-१ ८)=लंका

लंघित (१-८)=लांघने वाला

लइ (२१-२७)=ले

लख (११)=लाख

लक्खि (७-८)=लाख (लाखों) मे

लाख (१-१)=लाख

लखमरण (१-२)=एक वीर का नाम

लग (१४-१ २१-८ २१)=तक

लगइ (१२-१)=तक ?

लगइ-रूप (१-१)=तक के

लड़ता (२१-१)=लड़ते हुए

लहइ (७)=(सूक्ष्म रूप मे) पाता है, मोक्ष होता है

लहुरुव (१४-१)=लघुक छोटा ?

लहिंगउ (२१-११)=लिवा के लिया

लही (२१)=

लहउ (२१-११)=लहिंगउ

लाऊ (११-४)=एक नाम

लाख (१-१ ११-७)=लाख

लागइ (११-४ २१-७ १८-२) =लगती है

लागइ खर (२१-११)=लगती है

लायउ (२१-२)=लाया
लागता (२१-१)=भिड़ते हुए,
प्रहार करते हुए
लाया (६-१ ११)=लाने
लागि (१७-३ १८-२)=
लागी (२६-८)=लगी
लागी करि (१२-४)=
लाज (१४-१)=लज्जा
लालउ (१२-४)=लाला सेठ नाम
लियउ (१-७ ६ २१-११)=लिया
लिया था (६-५)=लिये थे
लीजइ (१५-३)=लिये जायें
„ (२ -५)=लीजिये लिये जायें
लीजउ (२६-२६)=लेना लीजियो
लीधा (१२-८)=ले लिये
लै (१२-१)=लेकर
लैखइ (१४-१)=
लेखउ (१२-१)=लेखा हिसाब
लेखे=हिसाब के
लेयणहार (१२-८)=लेने वाला (है)
(१७-१)=लेने की इच्छा
करने वाला
लोइ (१४-८)=लोक में
लोक (२१-११)=लोग
लोकां-रा (२१-१६)=लोगों के
लोकेसर (१४-१)=लोकेश्वर ?
लोपि (१४-१)=गुप्त करके

लोह (२६-२१)=
लोहड़ (१२-४)=लोहे, हथियार
लोहड़ मिळी (१२-४)=युद्ध में मिले
लोहड़उ करतां करतां (२१-५)=
शस्त्र चलाते-चलाते शस्त्र चलाते हुए
लोहि (२६-११)=शस्त्रों में
लोही (२६-२ २६-२१)=लोह (है)
लोहा लोह (२६-२१)=

व

वंस (१४-११)=वंश
(१२-१ २६-५)=राजपूतों के
छतीस कुल
वइर (२१-१६)=वैर, वैर का बदला
वखाणिसी (२६-१)=बखानेंगा
वखाणिसै (२६-५)=बखानेंगे
वगा (२४)=वंश का बना
वट्ट (२७)=मार्ग बाट (वर्त्म) चाल
रीति मर्यादा
वड (१५-१ २१-८)=बड़ी
„ (११ २६-५)=बड़े
(२४)=बड़ा
वडउ (२१-१६)=बड़ा
वड महुलि (१२-५)=१ बड़ी रानी
२ बड़ी रानी
वड महिली (२१-८)=बड़ी रानी
वडाई (४-२ २१-८)=बड़ाई
वडा हुआ (११)=एक साथ

लावड (२१-२)=लगा
लागतौ (२१-१)=भिड़ते हुए,
प्रहार करते हुए
लाया (६-१ ११)=लाये
लामि (१७-१ १८-२)=
लामी (२१-८)=लगी
लामी करि (१२-४)=
लाम (१४-३)=लम्बा
लालड (१५-४)=लाला एक नाम
लियड (६-३ ६ २१-१५)=लिया
लिया था (६-५)=लिये थे
लीजइ (१५-३)=लिये जायँ
(२१-५)=लीजिये लिये जायँ
लीजउ (२६-६)=लेना लीजियो
लीधा (१२-४)=ने लिये
लै (१२-६)=लेकर
लैवइ (१४-१)=
लैवउ (१८-३)=लेखा हिसाब
लैखै=हिसाब के
लैवणहार (१२-८)=लेने वाला (है)
(१७-३)=लेने की इच्छा
करने वाला
लोइ (१४-८)=लोक में
लोक (२१-११)=लोग
लोगां-रा (२१-१६)=लोगों के
लोकेसर (१४-३)=लोकेश्वर ?
लोरि (१४-३)=युद्ध करके

लोह (२६-२१)= —
लोहड़इ (१५-४)=लोहे, हथियार
लोहड़इ मिली (१५-४)=युद्ध में मिले
लोहड़उ करता करतां (२१-५)=
शस्त्र चलाते-चलाते शस्त्र चलाते हुए
लोहि (२६-२१)=शस्त्रों ने
लोही (२६-२ २६-२३)=लोहू (से)
लोहा लोह (२६-२१)=

व

वंस (१४-११)=वंश
(१५-१ २६-५)=राजपूतों के
छत्तीस कुल
वइर (२१-१६)=वैर, वैर का बदला
वखाणिसी (२६-१)=बखानेंगे
वखाणिसे (२६-१)=बखानिये
वज (२४)=वज्र का वज्र
वट (२७)=मार्ग वाट (वर्त्म) चाल
रीति मर्यादा
वड (१५-१ २१-८)=बड़ी
" (१६ २६-५)=बड़े
(२४)=बड़ा
वडड (२१-१५)=बड़ा
वड महपति (१५-५)=१ बड़ी स्त्री
२. बड़ी रानी
वड महिली (२१-८)=बड़ी रानी
वडाई (४-२ २१-८)=बड़ाई
वडा हुआ (१६)=एक छंद

बडी (४-२, २१-८)=बड़ी
बधता (२१-?)=बढ़ते हुए, बढ़कर, श्रेष्ठ
बनि (७)=वन में
बपि (२७)=शरीर पर (वपु)
बयली (२१-११)=बगली
बर (२१-२ ११)=श्रेष्ठ
बरसंत (१४-१)=बरसते हुए बरसते समय ?
बरस (१५-५)=वर्ष
बलभग (२५)=फिर से पड़ा ?
बलि (१२-४ २१-१)=फिर, और
बसंतवा (७)=रहने वाले
बसंति (२)=रहती हुई रहने वाली
बसी (१-४)=रही उत्पन्न हुई
बहती (२१-१५)=चलती हुई
बहुला (२१-१)=
बहै=मारे (बध)
बा (१-४)=वह ?
बागड़ी (१५-१)=एक राजपूत वंश
,, (२१-१६)=बागड़ी वंश का एक राजपूत वीर
बाधा (११)=बंधे
बाघेलणि (१४-७)=बाघेलिनी बघेलवंश की बाघली वंशीय रानी
बाणिज (१७-२)=बाणिज बाज बाबा
बाट (१-१ २१-२१)=मार्ग (बाट)
बाडि (११-१)=बाड़ घेरा
बाण्यां (१५-४)=बणियों
बात (२ १५-५ २१-७ ९ १ २४)=बात बातें
बार (१-१)=द्वारपाल रक्षा
(१५-५ २१-७)=देर
(२१-१)=द्वार
,, (२१-१७)=समय
बारह (२४)=रोके
बार बार (२१-१)=फिर फिर
बारि (२१-२५)=समय
बालन्द (१५-४)=बालन्द एक नाम
बावनी हो (२१-६)=बावनी है बावनियाँ
बास (४-१)=गंध
बासी (२७)=बसा कर, पहन कर
बाहण (२१-१)=वाहन सवारियाँ
बाह्या (२१-२५)=चलाये कौन
बिकरि (२१-१)=
बिकल (२४)=व्याकुल
बिकार (७)=बिकता है
बिक्रमाइत (१-४)=विक्रमादित्य
बिग्रह (१२-६)=युद्ध
बिचारिया (२१-१२)=सोचा जाय सोचिये
बिरद (१७)=विरुद, यश
बिरुझ (१-५)=लड़ना, युद्ध करना
बिरुझिया (१२-६)=लड़ाई लड़ना

बिहता (२१–२१)=महते हुए
बिहे (२१–२२)=लड़ कर ?
बिधि (२१–१ ५)=प्रकार
बिचार (१७–१)=विध्वस्त करने वाला
बिमाणी (६–९)=प्रसन्न किया
बिरतव (२१–६)=?
बिरदैत (१४–११)=बिरद वाले
बिरोमि (१–१)=
बिरोम्मिह (१–१)=?
बिमाणी (६–४)=प्रसन्न किया
बिष्णुहि (२१–१)=
बिसन-बिसन (२१–१७)=विष्णु
विष्णु-ध्वनि
बिसेखिमह (१२–८)=की विशेषता
लिए हुए ?
बिहमाउ (१४–१३)=?
बिहाणि (२१–१)=सबेरे, कल सबेरे
बिहूणउ (१–२)=रहित (बिहीन)
बीचे ही (२१–१२)=बीच में ही
मार्ग में ही
बीज (२४)=बिजली (को)
बीजइ थंभ (१२–१६)=विजय-स्तम्भ
बीर (२१–६, ११ २५)=वीर, योद्धा
बीरती (२६–१)=?
बीसरी (२१–८)=भुला देती है
बीसरी (१८–२)=भूल गये
बीहु-हुवि (१–१ २ १ ४ ५)=दो बीस
हाथों वाली है देवी
बेगाबेगि (२१–१)=जल्दी से जल्दी
बेढ (८)=युद्ध
बेहुयउ (२१–२२)=
बेढ्यो (२१–६)=घेर लिया
बेलखिमाइत (१–२)=विनती करने वाले
बेला (१४–२२ १९ १५ १ १७ ७
२२ २१–११)=समय समय में
बैजउ (१२–४)=बीजा, एक नाम
बैसा (२)=बीसा
ब्यामोहे (२१–६)=?
व्रन (१२–१)=युद्ध

स

संख्या (२४)=गिनती
संग्राम (१७–१)=युद्ध
संग्रामसाहि (१७–१)=संग्राम में
प्रवीण और निडर शाह
संघाट (१२–५ २१–७)=सघात समूह
सचलतई (२–४)=प्रस्थान करते समय
संपूरण (६–४)=संपूर्ण परिपूर्ण
समाप्त हुआ (११)=आ पहुंचे
समाप्ती (१२–५ २१–७)=संप्राप्त
संप्राप्ती हुवउ (१२–५ २१–७)
=प्राप्त हुआ आ पहुंचा
संभरि=सांभर देश
संभरि-धणी (२१–१२)=सांभर का
पति चौहानों की उपाधि
(यहां अचलदास)

समसुमती (२१–८)=समान बल वाले ?
समरसीह् (६–२)=आमार का चौहान वंशीय राजा
समहरि (२६–६)=समर में युद्ध में
समसमहा (१४–११)=साथ ?
सर (१२–६)=बराबरी
" (२६–२२)=बिना ?
सरद (१८–६)=
सरगि (२७)=स्वर्ग में
सरगि (२२)=स्वर्ग के लिए
सर-वारि (१४–४)=बाणों के समूह में
सरिस (१२–१)=साथ
सरिसउ (२४)=साथ
सरूमी (१८–१)=हुई बह गई ?
सधारथी (२१–८)=स्वार्थी
सधारली (१४–६ २१–८)=
सवि-मयली (२६–११)=सविमयली चांमुनी स्त्रियां
सह (१२–२ १४–४)=सब
सहर (८)=सहे, सहन करे
" (६–६)=सहन कर सकता है
(१८–२)=सहन करता है
सहस (६–१ १२–४ २१–७ १६ १६–२)=हजार, सहस्र
सहारह (२४)=(सहार) सहे
सहि (१४ ११)=सब
सहिबद (६–६)=सहा जाय

सहिव (४–२ २१–६)=समेत
सहू (१२–१ ११ १४)=सब सभी
सांभुमि (१४–७)=सांखली
प्रथमराज की सांखला वंशीय रानी
सांभुली (२६–१)=?
(पाठ स्पष्ट नहीं)
सांड (२१–११)=सांड वृषभ
सावरि (६–४ ६–६ ८)=
सांभर-वाली=चौहान वंश की उपाधि क्योंकि मूलतः वे सांभर के स्वामी थे
सांमक्रमा (२१–१६)=सुने
सांवद्र (१७–२)=१ एक साथ
२ बलशाली
साइ (१)=वही (हां) ?
साकर (४–१)=शक्कर
सार्दूल (१४–११)=बड़ी शाखा वाले श्रेष्ठ
साचिवइ (२१–१४)=सचिये संचित कीजिये
सात (१७–२ २१–४)=सात
सातल (६–४ १२–६)=एक नाम
" (१२–८ २७)=चौहान वंशीय एक वीर, समियाणा दुर्ग का रक्षक
साहउ (१२–४)=साहस (साधु न) एक नाम
सामद (६–४ ६)=सामने

सामी (१४-२)=हे स्वामी हे पति
सार (१९-७ १५-६ २१-८ १६)
मध्य
सारद (१)=शारदा सरस्वती
सारहु (१५-६ २१-८ १६)=
मध्य पुत्री पुत्री
सारिखड (२४-४)=सरीखा
सारिखा (६-३)=जैसे
(६-२ ८)=सरीखे
सारीखा (६-४ ६)=जैसे
सालिग्राम (२१-२)=शालिग्राम
सावंत (११ १५-१)=सामंत सरदार
साहण (२)=साधन सैन्य सामग्री ?
साहण (६-१ १२-७ १६ २१-३)
=घोड़े
" (२१-३)=१ घोड़े २ साधन
साहि (१२-४)=बादशाह ने
(१२-४)=सब
" (१७-१)=शाह, बादशाह, राजा
साहिबड (१२-२)=?
साहि-सिपाह (१७-१)=बादशाहों को
बढ़ाने वाला
सिंघस (६-६)=
सिंघासण (१५-८)=सिंहासन
सिकार (१)=
सिरदलहार (२१-६)=सृष्टिकर्ता
ईश्वर

सिपुर (१५-३)=सिंधुर एक नाम
सिरि (६-१)=ऊपर
" (२४-२७)=सिर पर
सिवारपुर (६-३)=एक स्थान
सिव (२१-८)=शिव
सिवदास (४-१)=शिवदास
अचलदास का चारण (कवि)
सिव-सिव (२६-११)=शिव ! शिव !
सिहरति (४-१)=महारथ का है ?
सींधल (१४-१६ २१-११)=सिंधल
अचलदास का पुत्र
सींधलहूंत (२६-२३)=सिंधल के वंशज
सींधलहरि (२६-१)=सिंधल के वंशज
ने. पाठ स्पष्ट नहीं ?
सींधलहरे (२६-१८)=सींधल के
वंशज ने
सीप (१४-२)=
सीम (१४-२)=
सीह (४ ७ ८ १५-२)=सिंह
सीह (? पुर) (६-३)=सीहोर ?
सीहउरि (६-४ २१-६)=सीहोर में
सीहोर नगर में
सु (१-१ ४)=वाक्यपूरक अव्यय
अथवा बहुत बढ़ के
सु (सु) (४-२ १६-१६)=सु सो
सु-नस (२१-१४)=अच्छा यश
सुजस (१६-१६)=

हुवइ (१२-२ ६ २१-१ २१)
=होता है
हुवइ छइ (२१-११)=होता है
हुयउ (२१-१)=हुआ
हुआ (६-५ १४-१२)=हुये
हुआ छइ (२१-८)=हुए है
हुंता (२१-२१)=थे
हुंती (१-५)=(गु) भी
हुवइ (१४-७)=होता है
(५-२)=हुआ
हुयउ (१४-२१)=हुआ
हुआ (११ २१-६)=हुये
हे (२१-१)=हे

हेक (१५, २१-४)=एक
हेकणवइ (५-१)=इक्यानवे
हेला (२१-११)=?
हेमर=घोड़े (हयवर)
हो (६-७ ६ १७-१ २१-५ ४)
=है, अरे
होइ (१२-२)=होता है
होइ रह्यउ (२१-१७)=हो रहा है
होस्यइ (१४-३)=होऊगी
होई (२१-१)=होता है
होसइ (१-५ ६-८)=होता है
हो सकता है
होवणउ लागउ (२१-२)=होने लगा